केरल रीडर
हिन्दी

Kerala Reader
HINDI

STANDARD IX

1962

P. R. Antony
Std. IX A
St. AEq. Hs.
Ernakulam
North.

केरल रीडर

हिन्दी

KERALA READER
HINDI

STANDARD IX

Price 85 nP.

1962

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है, सारे भारतवासी मेरे भाई-बहन हैं।

मैं अपने देश को प्यार करता हूँ और उसकी संपन्न और विविध परंपरा पर गर्व करता हूँ।

मैं सदा उसके योग्य रहूँगा। मैं अपने माता-पिताओं, गुरुजनों और बड़ों का आदर करूँगा और प्रत्येक से सम्मान-पूर्ण व्यवहार करूँगा। मैं प्राणियों पर दया रखूँगा।

मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपने देश और देशवासियों पर श्रद्धा रखूँगा। उनकी उन्नति और समृद्धि पर ही मेरा सुख निर्भर है।

PRINTED AT THE V. V. PRESS, QUILON

Kottam

Reg. No. 2961
class. 4

P.R. Antony
Std. IXA
St. Aug. Hs.
Ernakulam
North

प्रस्तावना

"केरल हिन्दी रीडर" माला की यह चौथी रीडर है। यह केरल के हाईस्कूलों में हिन्दी की पढाई के लिए नये पाठ्यक्रम के अनुसार लिखी गयी है।

विद्यार्थियों के स्तर और उम्र को ध्यान में रखते हुए विषयों और पाठों का चयन बडी सावधानी से किया गया है।

हर एक पाठ के अंत में अभ्यास के साथ-साथ निश्चित प्रणाली के अनुसार व्याकरण भी दिया गया है।

आशा है कि अध्यापक और विद्यार्थी इससे फायदा उठायेंगे।

शिक्षा विभाग,

केरल सरकार.

Friday - Hindi Grammar.

पाठ-सूची

पाठ		पृष्ठ
१.	देश प्रेम क्या है?	1
२.	सम्राट से साधु	6
३.	तन्दुरुस्ती	10
४.	सादगी की मूर्ति	16
५.	मन चगां तो कठौती में गंगा	21
६.	शेर का बच्चा चूहा बनेगा?	27
७.	सागर के कुछ अनोखे जीव	31
८.	अछूत की गुरु दक्षिणा (पहला भाग)	36
९.	काश्मीर	44
१०.	तिब्बत	50
११.	अछूत की गुरु दक्षिणा (दूसरा भाग)	56
१२.	छत्रपति शिवाजी	64
१३.	धरती का बेटा	69
१४.	हम कैसे सुखी बनें?	73
१५.	अन्य देशों के लोग—हब्शी	78
१६.	बिजली	84

पद्य-भाग (आधुनिक)

१.	गुलाब	89
२.	हरे-भरे	90
३.	वर्षा ऋतु	91
४.	कोयल	93
५.	मेरा नया बचपन	95
६.	संदेश	97
७.	तब याद तुम्हारी आती है	

(प्राचीनपद्य)

१.	कबीर के दोहे	101
२.	तुलसी के दोहे	103
३.	रहीम के दोहे	106

केरल हिन्दी रीडर

पाठ १

देश प्रेम क्या है?

हर देश की जनता अपने देश को प्यार करती है। जापान और इंग्लैंड में बचपन से ही बच्चों की शिक्षा में देश प्रेम को विशेष महत्व दिया जाता है। अन्य देशों की भी यही बात है। लेकिन देखा जाता है कि जापान का देश प्रेमी अपने पड़ोसी चीन से घृणा करता है। इसी प्रकार इंग्लैंड का नागरिक अपने देश के प्रति प्रेम प्रकट करता है और जर्मनी से नफरत। यह संकुचित देश प्रेम है। इस से विश्व भर में अशान्ति फैलती है।

क्या किसी देश के जंगल, पहाड और नदी की पूजा करना देश प्रेम है? बिलकुल नहीं। देश की भूमि उसका शरीर मात्र है। जनता ही देश की आत्मा है। इसलिए देशवासियों की उन्नति का प्रयत्न ही देश प्रेम माना जाता है। नेहरु जी का मत भी यही है।

हर देश में भिन्न भिन्न तरह के लोग रहते हैं । उदाहरण के लिए हम अपने देश को ही लें । हिन्दुस्तान में हिन्दू रहते हैं, मुसलमान रहते हैं और ईसाई भी । भौगोलिक और आर्थिक दृष्टि से भी हमारे देश का एक प्रांत दूसरे प्रांत से भिन्न है । बंबई और कलकत्ते में बडे बडे बंदरगाह हैं । वहाँ व्यापार खूब चलता है । काश्मीर और केरल में प्राकृतिक वैभव भरा हुआ है । किसी प्रांत में आबादी अधिक है और किसी में कम । इसी तरह किसी प्रदेश में अमीरी अधिक है तो दूसरे भाग में घोर गरीबी है । उद्योग-धंधों की भी यही बात है । सच्चा देश भक्त अपने प्रांत का ही हित नहीं चाहता । वह सारे देश की भलाई चाहता है ।

हम अपने देश को बडा मानते हैं । क्या, आबादी की वृद्धि ही इस बडप्पन का लक्षण है? नहीं, जनता में भावों और दिलों की एकता ही देश के बडप्पन का लक्षण है । जैसे पैर में लगे हुए कांटे का दर्द सारे शरीर को दुःख पहुँचाता है वैसे ही किसी एक प्रांत का कष्ट समस्त देश को कष्ट पहुँचाता है । ऐसा मानना ही सच्चा देश प्रेम है ।

सदा आज़ाद रहना देश प्रेम का पहला पाठ है । सच्चा देश भक्त किसी भी प्रकार की गुलामी सहन नहीं कर सकता है ।

देश की स्वतंत्रता उसे अपनी जान से भी प्यारी है । अतः अपने देश की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए वह अपना सब कुछ कुरबान करने को तैयार रहता है ।

जो अपने देश के प्राचीन गौरव का स्मरण नहीं करता है, उसका देश प्रेम अपूर्ण है । इसका यह मतलब नहीं कि दूसरे देश के गौरव की निंदा की जाए । कठिन श्रम के द्वारा ही देश के गौरव को स्थायी बना सकते हैं । कर्तव्य किये बिना अधिकारों के लिए लडना मूर्खता है । हर बात के लिए सरकार का मुँह ताकना भी उचित नहीं ।

यह जनतन्त्र का ज़माना है । तो हर देशवासी का अपना विशेष दायित्व है । गरीबी, अशिक्षा और बीमारी को दूर करने की सरकारी योजनाएँ जनता के पूर्ण सहयोग से ही सफल हो सकती हैं । सरकार की संपत्ति जनता की संपत्ति है । उसकी रक्षा करना हर देश प्रेमी का फ़र्ज है ।

देश प्रेम विश्व प्रेम की पहली सीढी है । "जिओ और जीने दो" ही देश प्रेम का सच्चा आदर्श है । एक देश अन्य देशों के अनुभवों से लाभ उठा सकता है । लेकिन दूसरे राष्ट्रों को डराना और उनपर आक्रमण करना डाकुओं का धर्म है । हमारे राष्ट्रपिता

गांधीजी जितने बड़े देशप्रेमी थे उतने ही श्रेष्ठ विश्वप्रेमी भी थे। हमें यह मानना चाहिए कि हम सब एक ही मानवता के अधिकारी हैं; यह वसुधा ही हमारा कुटुम्ब है ।

अभ्यास

अर्थ लिखो:–

नफरत, आबादी, आज़ाद, सीढी, बंदरगाह, फर्ज ।

वाक्यों में प्रयोग करो:–

कुरबान करना, मुँह ताकना

लिंग बताओ:–

नफरत, फर्ज, ज़माना ।

प्रश्न:–

१. देश प्रेम के बारे में नेहरु जी का मत क्या है?

२. भौगोलिक और आर्थिक दृष्टि से हमारा देश कैसा है?

३. केरल और काश्मीर की विशेषता क्या है?

४. सच्चे अर्थ में देश प्रेम क्या है?

व्याकरणः–

सामान्य भूत कालिक क्रियाओं से नीचे लिखे वाक्यों को पूरा करोः-

१. राम ने एक किताब —— ।

२. बापू जी कई साल जेल में —— ।

३. उसका गाना सुनकर मैं खुश —— ।

४. क्या तू ने दिल्ली —— ?

५. सीता ने आज चार आम —— ।

कर्तृवाचक शब्दों से वाक्यों को पूरा करोः–

१. —— एक रुपया दिया ।

२. —— काशी में रहते थे ।

३. —— दो किताबें खरीदी हैं ।

४. —— अशोक का नाम सुना होगा ।

५. —— दो भाषाएँ पढी थीं ।

६. —— हिन्दी में रामायण लिखी है ।

पाठ २

सम्राट से साधु

घमासान लडाई खतम हो गयी थी । मैदान में हाथियों, घोडों और आदमियों के कटे हुए अंग, रथों के टूटे हुए भाग आदि फैले हुए थे । लाशें हजारों की तादाद में पडी हुई थीं । खून की नदियाँ बह रही थीं । घायलों के आर्तनाद से सारा मैदान गूँज उठता था । वह रण-भूमि बडी ही भयानक दिखाई देती थी ।

मशालें लेकर आदमी अपने अपने बंधुओं को ढूँढ रहे थे । माताएँ बेहोश हो रही थीं । वधुएँ अपने अपने पति के मृत-शरीर से लिपटे हुए बिलख रही थीं । भाई-बन्धु, माता-पिता, बीबी-बहन सब विलाप कर रहे थे । चारों ओर कुहराम मच रहा था ।

इस लडाई में कलिंग सेना की वीरता विफल हो गयी । विजयी सम्राट अशोक भी युद्ध का यह अन्तिम दृश्य देखने आये । कुछ देर तक वे देखते रहे । उनके मन में खुशी के बदले ग्लानि छा गयी । वे सोचने लगे :– "आखिर मनुष्य का धर्म मनुष्य को मार डालना तो नहीं । मनुष्य को जीने देना

और उसकी पीडाओं को दूर करना ही राजा का फ़र्ज है। मैं ने बडा पाप किया। मुझे इसका प्रायश्चित करना होगा।"

अशोक की चिन्ता जारी रही। "क्या, मैं ने यह सब अपनेलिए किया? क्या, राजा का जीवन उतना स्वतंत्र है जितना समझा जाता है? कभी नहीं। राजा के जीवन में बंधन है। एक भिक्षु के जीवन में मुक्ति है। मुझे बंधन नहीं, मुक्ति चाहिए। जिस मार्ग से होकर बुद्ध देव ने मुक्ति पाई है, वही सच्चा मार्ग मालूम होता है। हिंसा में दुःख है, अहिंसा में सुख है। उसमें शांति है, मुक्ति है और दुनियाँ की भलाई।"

उसी मैदान में खडे होकर उन्होंने प्रण किया कि मैं अपना सिंहासन छोड दूँगा और एक साधु बनूँगा। लोगों में प्रेम बढाने की भरसक कोशिश करूँगा।

अशोक अपने निश्चय पर डटे रहे। जिन्दगी भर वे एक बुद्ध-भिक्षु बने रहे। बुद्ध देव के उपदेशों को देश-विदेशों में फैलाने का उन्होंने सफल प्रयत्न किया। अपनी सारी संपत्ति उन्होंने इस महान कार्य में लगा दी। यहाँ तक कि अपने प्यारे पुत्र महेन्द्र और लाडली लडकी संघमित्रा को भी यह नया सन्देश फैलाने के लिए सिंहल भेज दिया।

अशोक के धर्माचरण और धर्म प्रचार से देश–विदेशों में शांति फैल गयी । लोगों के बीच प्रेम बढ गया । अहिंसा का जनता के बीच खूब प्रचार हुआ । इसी कारण भारत में अशोक का नाम बडे आदर के साथ अब भी लिया जाता है ।

अभ्यास

अर्थ लिखो:–

तादाद, मशाल, फर्ज, लाडली, प्रण, बिलखना, लाश ।

वाक्यों में प्रयोग करो:–

गूँज उठना, कुहराम मचना, मुक्ति पाना, प्रण करना ।

जवाब दो:–

१. लडाई के खतम होने पर मैदान में क्या क्या दिखाई पडे थे?

२. लडाई का मैदान देखकर अशोक ने क्या सोचा?

३. अशोक ने क्या प्रतिज्ञा की?

४. अहिंसा के प्रचार के लिए अशोक ने क्या किया?

व्याकरण:–

लिंग बदलो:–

बच्ची, बूढी, घोडी, कुत्ती, धोबिन, मालकिन, नौकरानी, पंडितानी, मुर्गी, बिल्ली, दादी, नाना ।

शुद्ध करो:–

१. आज तुम क्या खाये?

२. सीता एक लेख लिखी ।

३. राधा ने मुझ से यह बात कही ।

४. उन्होंने वहाँ गये होंगे ।

५. राम यह किताब पढी होगी ।

६. उन्होंने कुछ नहीं बोला ।

पाठ ३

तन्दुरुस्ती

अंग्रेज़ी में एक प्रसिद्ध कहावत है जो हमें बताती है कि चंगा मन स्वस्थ शरीर में रहता है । जिसका स्वास्थ्य ठीक है उसका दिमाग भी ठीक रहता है । उसका विचार स्वच्छ होता है और बरताव भी अच्छा । सभी जानते हैं कि जिसकी तन्दुरुस्ती बिगड गयी है उसे चैन नहीं मिलता । वह हमेशा झुंझलाता रहता है और दुःखी भी होता है । जिन्दगी उसके लिये एक भार माल्म होती है ।

अब हम विचार करेंगे कि तन्दुरुस्ती किन किन बातों पर निर्भर है; किन किन आचरणों से वह बढती है और कौन-से आचरण उसे बिगाड देते हैं ।

स्वास्थ्य केलिये सबसे पहली ज़रूरत हवा की है । हवा के बिना पाँच मिनट तक जीना मुश्किल है । जैसे बुरा कोयला भर देने से इंजन खराब हो जाता है वैसे ही गंदी हवा से फेफडे बिगड जाते हैं । जो लोग बडे बडे शहरों में रहते हैं उन्हें ताजी हवा नहीं मिलती । पर जो लोग देहातों में बसते हैं उन्हें साफ़ हवा

यथेष्ट मिलती है । इसलिये नगरवासियों को चाहिये कि वे शाम को किसी बगीचे में जावें और खुली जगह पर बैठकर साफ हवा खायें । हमें हर दम खुली हवा में साँस लेनी चाहिये । जहाँ तक हो सके बरामदे में लेटें ताकि काफ़ी खुली हवा मिले । घर में खिडकियाँ और दरवाज़े खुले रखें । ध्यान रहे कि हवा हमारे चौबीसों घंटे की खुराक है ।

तन्दुरुस्ती केलिये स्वच्छ हवा की तरह स्वच्छ पानी की भी ज़रूरत है । बिना भोजन किये, पानी पीकर आदमी बहुत दिनों तक ज़िन्दा रह सकता है । पर जो पानी हमारेलिए इतनी ज़रूरी चीज़ है, उसकी देखरेख हम थोडे ही करते हैं । गंदा पानी पीने से पेट में कई तरह के कीटाणु चले जाते हैं और वे बीमारियाँ पैदा करते हैं । शहरों में अच्छा पानी मिलने का प्रबन्ध रहता है । लेकिन देहातों की बात अलग है । कहीं गंदा पानी ही मिले तो उसे साफ़ करके पीना चाहिये । पानी को उबालने से सब दोष दूर हो जाते हैं ।

भोजन हमारी तीसरी आवश्यकता है । तन्दुरुस्ती को ठीक रखने केलिये पौष्टिक भोजन अनिवार्य है । पौष्टिक भोजन वही है जिससे शरीर को सभी आवश्यक सामग्रियाँ और वैटामिन मिल जायें ।

शरीर की बनावट पर विचार करने से जान पडता है कि प्रकृति ने मनुष्य को वनस्पति खानेवाला बनाया है। थोडा सा माँस खाने में कोई हर्ज नहीं। भोजन का ज्यादा हिस्सा वनस्पति का होना चाहिये। फल और दूध अच्छे भोजन हैं।

पशु-पक्षियों को देखो। वे स्वाद केलिये नहीं खाते, ठूँस-ठूँसकर पेट नहीं भरते। भूख लगने पर भूख भर ही खाते हैं। अब मनुष्य की बात लो। कितनी उल्टी है!

कभी भूख से अधिक न खाओ। धीरे धीरे चबाकर खाओ। खूब चबाने से मुँह की लार भोजन से मिल जाती है। तभी तो आसानी से हजम होता है। रोज नियमित समय पर खाना खाओ। जो कुछ खाओ प्रसन्न होकर खाओ। याद रहे कि भोजन करते समय व्याकुल रहने से हजम में बाधा होती है।

आदमी को हवा, पानी और अन्न की जितनी जरूरत है उतनी ही कसरत की भी है। कसरत से भोजन ठीक पचता है, और शरीर में चुस्ती आती है। कसरत के बिना मनुष्य तन्दुरुस्त नहीं रह सकता। तो कसरत किस प्रकार की हो? सब से अच्छी कसरत धरती पर मेहनत करना है। उससे शरीर मजबूत बनता है और साथ साथ जमीन भी खूब उपजाऊ बन जाती है।

तन्दुरुस्ती के लिए घूमना और खेलना भी ज़रूरी है । प्रातः काल घूमने जाना स्वास्थ्य के लिए लाभ दायक है । हमारे देश में तरह तरह के खेल हैं जैसे, फुटबाल, टेनीस, क्रिकेट, कबड्डी आदि । इन खेलों से शरीर सुडौल और सुन्दर बनता है और मन भी चंगा हो जाता है । शाम की धीमी धूप स्वास्थ्य की दृष्टि से बडी लाभ दायक होती है ।

अब रही सफाई की बात । रोज़ नहाकर अपने शरीर को साफ रखना चाहिये । बहता पानी ही नहाने के लिये अच्छा है । दाँत साफ किये बिना नाश्ता करना बडी बुरी आदत है ।

घर को झाड-पोंछकर साफ रखना चाहिये । कोई भी सडनेवाली चीज़ खुली जगह पर नहीं फेंक देनी चाहिये । ऐसी चीज़ों को गाड देना ही उचित है ।

तन्दुरुस्ती मनुष्य की सबसे बडी मूल्यवान संपत्ति है । एक बार वह बिगड जायगी तो फिर उसे ठीक करना बडा मुश्किल है । बीमार आदमी न तो इस दुनियाँ का आनन्द ले सकता है, न अपना पुरुषार्थ प्राप्त कर सकता है । हमारे ऋषियों ने ठीक ही बताया है कि—

"शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ।"

अभ्यास

अर्थ बताओ:—

चंगा, बरताव, निर्भर, ताज़ा, खुराक, गन्दा, हर्ज, चबाना, चुस्ती, सुडौल, फेफड़ा ।

वाक्यों में प्रयोग करो:—

हज़म होना, नाश्ता करना ।

जवाब दो:—

१. साफ हवा मिलने के लिए शहरवालों को क्या करना चाहिए?

२. पौष्टिक भोजन किसे कहते हैं?

३. खूब चबाकर खाने से क्या फ़ायदा होता है?

४. कसरत किस प्रकार की होनी चाहिए?

५. तन्दुरुस्ती मनुष्य की सब से बड़ी मूल्यवान संपत्ति क्यों मानी जाती है?

६. तन्दुरुस्ती किन किन बातों पर निर्भर है?

व्याकरण:—

निर्देशानुसार वाक्यों को मिलाकर लिखो:—

१. लोग देहातों में रहते हैं । उन्हें साफ हवा यथेष्ट मिलती है । ('जो' का प्रयोग करके)

२. बुरा कोयला भरने से इंजन खराब हो जाता है। गन्दी हवा से फेफड़े बिगड़ जाते हैं। (जैसे—वैसे का प्रयोग करके)

३. आदमी को हवा, पानी और अन्न की जरूरत होती है। कसरत की भी जरूरत होती है। (जितना और उतना का प्रयोग करके)

अपूर्ण भूतकाल में बदलो:—

१. रामने रोटी खाई थी।

२. मैं सबेरे स्कूल गया।

३. तुमने पाठ लिखा था?

४. राम के छोटे भाई ने सभा में व्याख्यान दिया।

हेतुहेतुमद् भूत कालिक क्रियाओं से वाक्यों को पूरा करो:—

१. तुम यहाँ —— तो उसको ——।

२. वह मुझसे —— तो मैं काम ——।

३. गोपाल —— तो परीक्षा में —— ——?

पाठ ४

सादगी की मूर्ति

आज हमारे देश के नेताओं में बाबू राजेन्द्रप्रसाद का नाम बहुत प्रसिद्ध था। देश को आजाद बनाने में उनका बड़ा हाथ था। आपने भी महात्माजी की तरह ही लोकप्रियता तथा प्रसिद्धि प्राप्त की। सरलता और सादगी में आप पूर्णतया गांधीजी के अनुयायी थे। आप एक सच्चे लोकसेवक थे। विद्वत्ता की दृष्टि से भी आप एक उच्च-कोटि के व्यक्ति हैं। आप का व्यक्तित्व महान और प्रकृति गंभीर थी।

इतने बडे व्यक्तित्व से संपन्न होते हुये भी आप ऐसे साधारण हैं कि आप की पहचान कठिन है। साधारण आदमी तो बिना परिचय के बता नहीं सकता कि आप इतने उच्च कोटि के व्यक्ति हैं, हमारे प्रथम राष्ट्रपति हैं।

राजेन्द्र बाबू को आडंबर ज़रा भी पसंद नहीं। एक घटना सुनो। कुछ वर्ष पहले की बात है। उन दिनों वे काँग्रेस के सभापति थे। तब एक बार वे किसी काम से प्रयाग गये। शाम का समय था। चारों तरफ़ अंधेरा छाया हुआ था। बाबूजी "लीडर" के सम्पादक चिन्तामणि जी से मिलने गये।

दरवाज़े पर चपरासी खडा था। राजेन्द्र बाबू ने अपने नाम का कार्ड चपरासी को देकर कहा, "इसे अपने बाबू को देकर ख़बर करो।"

संध्या का समय था। राजेन्द्र बाबू सादी पोशाक में थे। चपरासी ने समझा कि यह कोई मामूली आदमी है। चपरासी अंदर गया। उसने देखा कि मालिक कोई काम कर रहे हैं। चपरासी चुपचाप नाम का कार्ड मेज़ पर रख कर चला आया।

इधर क्या हो रहा था? जाडे का मौसम था। तीन चार नौकर बाहर अलाव में ताप रहे थे। यह चपरासी भी उनके साथ

जा बैठा और हाथ सेंकने लगा । राजेन्द्र बाबू ने सोचा कि अंदर से कोई आकर बुलायेगा । कुछ देर तक प्रतीक्षा की । जाडा लगने लगा । तब वे भी नौकरों के साथ बैठकर तापने लगे ।

काम से छुट्टी पायी तो चिन्तामणि की नजर बाबूजी के कार्ड पर पडी । वे चौंक पडे और सोचने लगे कि यह कार्ड कैसे आया और कब आया । तुरन्त ही चपरासी को बुलाया । पूछा कि कार्ड कब से मेज पर रखा है । उसने कहा कि एक घंटा बीत गया होगा ।

यह सुनकर चिन्तामणि जी का चेहरा पीला पड गया । उनकी घबराहट का कोई ठिकाना नहीं रहा । चपरासी से कहा "अभी पता लगाओ, कार्ड देनेवाले इधर कहीं हैं या चले गये ।"

चपरासी ने कहा, "वह आदमी अलाव में ताप रहा है।"

चिन्तामणि ने उन्हें बुला लाने को कहा । राजेन्द्र बाबू अंदर आये तो चिन्तामणि ने उन से कई बार माफी माँगी ।

मालिक की घबराहट देखकर चपरासी को मालूम हो गया कि यह तो कोई मामूली देहाती नहीं, कोई प्रमुख नेता हैं । बेचारा नौकर घबरा गया । उसका कलेजा धक-धक करने लगा ।

इसी सादगी ने राजेन्द्र बाबू को चोटी का नेता बना दिया है। वे देखने में बिलकुल भारतीय किसान जैसे लगते हैं। रंग-रूप, बोल-चाल, और वेष-भूषा सब में वे सोलह आने भारतीय हैं। जन सेवा या विद्वत्ता में वे किसी के पीछे नहीं। वे बडे शान्तिप्रिय और मिलनसार व्यक्ति हैं। हमारा सौभाग्य है कि ऐसे सरल प्रकृति के सज्जन ही हमारे प्रथम राष्ट्रपति बने।

अभ्यास

अर्थ बताओ:–

सादगी, चपरासी, पोशाक, मौसम, अलाव, सेंकना, नज़र।

वाक्यों में प्रयोग करो:–

खबर करना, छुट्टी पाना, पता लगाना।

जवाब दो:–

१. राजेन्द्र बाबू की पहचान क्यों कठिन होती है?
२. राजेन्द्र बाबू की सादगी के बारे में एक घटना का वर्णन करो।
३. राजेन्द्र बाबू ने चपरसी से क्या कहा?
४. चपरासी क्यों घबरा गया?

न्याकरण:–

'सक' और 'चुक' सहायक क्रियाओं का प्रयोग करके वाक्यों को पूरा करो:–

१. मैं यह किताब —— —— ।
२. शारदा गीत —— —— ।
३. बच्चा रोटी —— —— ।
४. सब लोग तस्वीर —— —— ।
५. माँ बच्चों को भोजन —— —— ।
६. तुम कब यहां —— —— ।

पाठ ५ [पाँच]

मन चंगा तो कठौती में गङ्गा

रैदास भगत अपने घर के बाहर सडक पर बैठकर जूता गांठा करते थे। एक दिन सामने के रास्ते से एक पंडित जी गङ्गा स्नान को जा रहे थे। चलते चलते उनका जूता टूट गया। चमार को देखकर पंडित जी बोले—"भाई मेरा जूता गांठ दो। मुझे गङ्गा जी जाना है।"

रैदास जूते की सिलाई करने लगे। पंडित जी बोले, अरे इतना बडा पर्व है। हम लोग बीस पचीस कोस चलकर नहाने आये हैं। तुम्हारे तो यह कोस भर पर गङ्गा जी है। क्या तुम नहाने न जाओगे?

रैदास काम करते करते बोले, "महाराज, मैं गरीब आदमी गङ्गा नहाता रहूँ तो बाल-बच्चों का निर्वाह कैसे हो जायगा? कुछ रुक कर वे बोले, "अजी मन चंगा तो कठौती में गङ्गा।"

पंडित जी बोले, "तुम गंवार हो, तुम्हें आज के पर्व के फल का पता नहीं। तुम्हारा न जाना ही ठीक है। चमार के नहाने से गङ्गा जी की पवित्रता घट जायगी।"

रैदास ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया । पंडित जी के काम को पूरा करके उनके सामने रख दिया ।

पंडित जी टेंट से एक पैसा निकाल कर रैदास को देने लगे । रैदास बोले, "मैं आप से मजूरी नहीं लेना चाहता । मेरा एक काम कर दीजिए ।"

पंडित जी ने पूछा—क्या है?

रैदास बोले, "ये दो सुपारियाँ मेरी ओर से गङ्गा जी में भेंट चढा दीजिये । लेकिन इस शर्त पर कि गङ्गा जी हाथ बढाकर इन्हें लें।"

पंडित जी मन में उसकी ऐंठ पर हँसे, पर कुछ न बोले। सुपारियाँ झोले में डाल लीं । घाट पर पहुँचकर नहाये धोए, पूजा-पाठ किया । वापस होने को थे कि रैदास की सुपारियाँ याद आयीं । शर्त भी याद आयी । पंडित जी को विश्वास तो न था कि ऐसा हो सकता है । फिर भी गङ्गाजी को सुनाकर बोले, "ये रैदास की सुपरियाँ हैं । उसने कहा है कि गङ्गाजी हाथ बढाकर लें तो दे देना ।"

जल में से उसी समय एक हाथ निकला और सुपारी लेकर अंदर हो गया । इसके बाद दूसरा हाथ सोने का एक कीमती

सुन्दर कंगन लिये निकला । साथ ही आवाज़ सुनी, "यह प्रसाद रैदास को दे देना और कहना कि तुम्हारी भेंट गङ्गा ने स्वीकार की है ।"

ब्राह्मण चकित हो गये । उनके मन में रैदास के प्रति श्रद्धा तो अवश्य हुई । लेकिन कंगन का लोभ इतना ज़ोर का था कि वे सीधे घर को लौट चले । घर जाकर उन्होंने पत्नी को कंगन दिखाया । देखकर वह खुश हो गयी । सोने का जवाहिरात जडा हुआ कंगन । उसने सोचा कि सारी गरीबी अब दूर हो जायगी । पंडित जी से बोली, "इसे राजा के यहां ले जाकर भेंट करो । पूरा इनाम मिलेगा । गरीबी से पिंड छूट जायगा ।"

पंडित जी कंगन लेकर दरबार में पहुँचे । कंगन की भेंट पर राजा बहुत खुश हुए । पंडित जी को एक लाख रुपया इनाम में दिलवाकर बिदा किया । कंगन रानी के पास गया । उसे देखकर वह लट्टू हो गयी । हाथ में पहनकर देखा । सब ने बडी तारीफ़ की । पर कहा, "महारानी का दूसरा हाथ सूना लगता है । इसका जोडा चाहिये ।" राजा को उसकी खबर मिली । पंडित जी बुलाये गये । राजा ने कहा, "इसका जोडा लाओ । नहीं तो तुम्हें देश-निकाला मिलेगा ।"

पंडित जी घबरा गये । उन्होंने कंगन पाने की सारी कहानी कह सुनायी । राजा बोले, "जो कुछ कहना हो रैदास से

जाकर कहो । मुझे तो इसका जोडा चाहिये ।" पंडित रैदास के यहां पहुँचे । इनाम के रुपये उनके सामने रखे और बीती बातें कह सुनाईं । रोकर बोले, "भगत, किसी तरह जान बचाओ ! गङ्गाजी के पास जाकर इसका जोडा लाकर दो ।"

रैदास ने कहा, "महाराज, रुपये मुझे नहीं चाहिये । यह तो आप ले जाइये । गङ्गा माई मेरी मजूरी से खाने भर को देती है । गङ्गाजी तक जाने का मेरे पास समय नहीं है । पर मैं आप को राजा की नाराजगी से बचाऊँगा ।"

पंडित जी उदास हो गये और बोले, "तो जैसा तुम ठीक समझो, करो ।"

रैदास ने चाम भिगोनेवाली अपनी उस कठौती पर कपडा डाला और कहा, "मन चंगा तो कठौती में गङ्गा ।" कपडा उठाते ही उसमें चमकता हुआ ठीक उसी जोडे का कंगन दिखाई दिया ।

रैदास ने कहा, "यह लीजिये और राजा को दे आइये ।" पंडित जी रैदास के पैरों पर गिर पडे और माफ़ी माँगने लगे । उन्होंने रैदास से राजा का दिया पुरस्कार स्वीकार करने की प्रार्थना की । पर रैदास ने कहा, "मैं अपनी मजूरी से सुखी हूँ । मुझे ज्यादा नहीं चाहिए ।"

अभ्यास

अर्थ बताओ:–

पर्व, कठौती, गंवार, टेंट, सुपारी, ऐंठ ।

वाक्यों में प्रयोग करो:–

गांठना, भेंट करना, पिंड छूटना, लट्टू होना, तारीफ़ करना, देश-निकाला होना ।

जवाब दो:–

१. रैदास ने पंडित जी को सुपारियाँ क्यों दीं ?

२. गङ्गाजी ने रैदास के लिए क्या दिया ?

३. राजाने ब्राह्मण को क्या आज्ञा दी ?

४. रैदास ने राजा के क्रोध से पंडितजी को कैसे बचाया ?

व्याकरण:–

विशेषण रूप लिखो:–

नाराजगी, कीमत, चमक ।

चमकीला।

शुद्ध करो:– मैं

१. मुझे एक व्याख्यान दे सका । मैं

२. राम ने रोटी खा चुकी ।

३. उसकी बहन को हिन्दी बोल सकेगी ।

४. तुम से यह किताब लिख चुके ।

लग, दे—इन दो सहायक क्रियाओं से वाक्यों को पूरा करो.– जैसे:– मैं काम करने लगा ।

उसको आने दो ।

१. गोपाल दिल्ली जाने लगा
२. लीला ने उसको जाने दिया
३. मालिक नौकर को भेजने लगा
४. हम पांच बजे [illegible] लगे
५. छोटी बहन हिन्दी पढ़ने लगी

पाठ ६

शेर का बच्चा चूहा बनेगा?

सुभाष बाबू जवानी में कदम बढ़ानेवाले थे। उनकी उम्र १७ वर्ष की रही होगी। उस समय की बात है। वे मेट्रिक की परीक्षा पास कर चुके थे। अचानक उनके मन में एक विचित्र विचार आया। घर के एक कोने में बैठे बैठे वे किसी सोच में घंटों तक लगे रहते।

एक दिन वे घर से भाग खड़े हुये। घर में कोहराम मच गया। हर जगह उनकी तलाशी ली गयी। लेकिन कुछ नतीजा न हुआ। उनकी कोई खबर न मिली।

सुभाष बाबू को क्या हो गया? उन्हें आत्म शांति की चिन्ता हो गयी थी। वे एक सच्चे गुरु की तलाश में तीर्थ स्थानों में घूमते फिरते थे। लेकिन कोई भी ऐसा साधु या संत नज़र न आया जो उन्हें आत्म शांति का उपदेश दे सके।

हिमालय की तलहटियों में और घने जंगलों में वे घूमते रहे। ये जंगल खूँखार जानवरों से भरे हुए थे। लेकिन उन्हें भय छू तक नहीं गया। इस तरह छः महीनों तक वे मारे मारे फिरते रहे। न तो कुछ शांति मिली, न कुछ चैन।

एक दिन वे अपने आप घर लौट आये। घर में सब को बड़ा सन्तोष हुआ। विशेष कर उनकी माताजी को बड़ी प्रसन्नता हुई।

सुभाष घर तो लौट आये। मगर वे सन्तुष्ट न थे। उनकी आत्मा की प्यास अब भी बुझी नहीं; खोज की भावना दबी नहीं। उन दिनों उन्होंने एक मित्र को लिखा, "मेरा विचार है कि मेरे जीवन का एक खास मतलब है, और मेरा यह शरीर उस ध्येय को प्राप्त करने के लिये बनाया गया है। मुझ में एक अदम्य

भावना है जो कि प्रचलित विचारधारा को नहीं स्वीकार करती। ऐसा लगता है कि मैं अपनी विचार धारा औरों के लिये बनाता हूँ।

उनकी प्रखर विचार-धाराओं ने कहाँ तक भारतीयों को प्रभावित किया, इसका उज्ज्वल साक्षी है भारत की स्वतंत्रता की लडाई का इतिहास।

अभ्यास

अर्थ बताओ:–

जवानी, नतीजा, तलहटी, ध्येय, खूँख़ार, चैन।

वाक्यों में प्रयोग करो:–

भाग खडा होना, कोहराम मचना, तलाशी लेना, खबर मिलना, नज़र आना, मारा–मारा फिरना, प्यास बुझना, कदम बढाना।

जवाब दो:–

१. घर से निकलकर सुभाष बाबू ने क्या किया?

२. सुभाष बाबू का ध्येय क्या था?

व्याकरण:–

शुद्ध करो:–

१. मैं काम करना चाहिए।

२. गोपाल ने रोटी खाना चाहा।

३. भारत के लोग हिन्दी पढने चाहिए ।

४. मैं यहाँ आना चाहा ।

५. तुमने कब वहाँ जाने चाहते हो?

६. नौकरानी यह काम जरूर करनी चाहिए ।

वाच्य बदलो:–

१. घरवालों ने हर जगह उनकी तलाशी ली ।

२. उन्होंने मित्र को एक पत्र लिखा ।

३. पुलिस से चोर पकडा गया ।

४. हम हिन्दी सीखेंगे ।

लिंग बताओ :–

पानी, घी, भात, हवा, मोती, कोयला, महीना, कलम, मेज, कागज, हाथ, बांह, नाक, कान, जीभ, आँख, बाल ।

पाठ ७

सागर के कुछ अनोखे जीव

ज्यों ज्यों हम सागर की गहराइयों में जाते हैं त्यों त्यों रोशनी का रंग बदलता जाता है। धीरे धीरे इतनी गहराई आ जाती है जहाँ सूरज की रोशनी पहुँच ही नहीं पाती। फिर भी यहाँ रोशनी पायी जाती है। ऊपर से देखने पर ऐसा लगता है जैसे सागर की गहराई में आग लग गई हो। यह तो जल जीवों की बनाई अपनी रोशनी है।

गहराइयों में रहनेवाले ये जल जीव अपनी रोशनी उसी तरह खुद पैदा कर लेते हैं जैसे जुगनू पैदा करता है। ये खुद ही अपनी रोशनी चारों ओर बिखेरते रहते हैं। रोशनी पैदा करनेवाले जीवों की संख्या कम नहीं, ये जीव करोडों की तादाद में हैं।

मछलियाँ और दूसरे छोटे जीव यहां रोशनी देते हैं। इनमें से कुछ ऐसे हैं जो अपने सिर से उसी तरह रोशनी निकालते हैं जैसे रेल का इंजन। इस रोशनी में वे अपने से छोटे जीवों का शिकार करते हैं। किसी किसी मछली में रोशनी देनेवाली बत्तियाँ उसके पीछे पायी जाती हैं।

इनमें कुछ जीव रंग-बिरंगी रोशनी पैदा करते हैं और कुछ एक ही रंग की। रोशनी देनेवाली मछलियों में "कट्ल फिश" खास है। इसके सिर से लाल रंग की रोशनी निकलती है तो दुम से सफ़ेद रंग की। यह ज्यादातर सागर की १३०० से १६०० तक फीट की गहराई में पाई जाती है।

हिन्द महासागर में जावा के पास रोशनी देने वाली मछलियाँ पायी जाती हैं। इनकी आँखों के ठीक नीचे से रोशनी निकलती है। इन गहराइयों में "प्रकाश पलक" नाम की मछली पाई जाती है। यह अपनी रोशनी को अपनी मरज़ी से पैदा और बन्द करती है। इसका रोशनी देनेवाला भाग आंख की पलक जैसी खाल से ढका होता है। इस पलक के बंद होने और खुलने का काम बिलकुल हमारी पलकों जैसा होता है। मछली पलकों को खोलती है तो रोशनी बाहर छा जाती है, बंद करती है तो रोशनी भी बंद हो जाती है। मछुवे इन मछलियों को मारकर इनकी पलक निकाल लेते हैं तो २४ घंटे तक इन मरी मछलियों से रोशनी निकलती रहती है। यह तो बडी अनोखी बात है।

कुछ मछलियाँ रोशनी पैदा करती हैं तो दूसरी किस्म की मछलियाँ बिजली पैदा करती हैं। यह और भी अजीब है न!

इनमें बिजली धारी सर्पाकार मछलियाँ प्रसिद्ध हैं। अंग्रेज़ी में इनका नाम "इलैक्ट्रिक ईल" है। इनकी बिजली इतनी खतरनाक होती है कि अगर आदमी इसे छू लेता है तो मौत तक हो सकती है।

तुम जानते हो कि घर में जलनेवाली बिजली के तारों को छूने से कितना ज़ोर का झटका लगता है। उस झटके से कभी कभी मौत भी हो जाती है। बिजलीधारी ईल का शरीर छूने पर उससे दूना झटका लगता है।

ये बिजली धारी मछलियाँ अंधी होती हैं। फिर भी ये अपने रास्ते में आनेवाले दुश्मनों और दोस्तों को पहचान लेती हैं, जैसे चमगीदड रात के अंधेरे में अपने रास्ते की रुकावटों को पहचान लेता है। शत्रुओं से रक्षा पाने के लिये ईश्वर ने इन्हें यह शक्ति प्रदान की है।

यह अच्छी बात है कि इन मछलियों की इतनी खतरनाक बिजली बहुत देर तक नहीं ठहरती। एक मिनट में चार-पांच बार ही ये इतनी बिजली पैदा कर सकती हैं। अगर बार-बार ये अपनी बिजली पैदा करने की चेष्टा करती हैं तो फिर काफ़ी देर तक बिजली पैदा नहीं हो सकती। इस कमज़ोरी का फ़ायदा उठा कर शुरू में इनको पकडा जाता था।

बिजली धारी ईलों को पकडने की एक विचित्र रीति प्रचलित थी। सागर के जिन छिछले भागों में ये रहा करती हैं, उनमें पहले घोडे दौडाये जाते थे। इन घोडों से बचने के लिए ये ईल अपने शरीर से बिजली बार-बार पैदा करती थीं, तो कुछ देर में ही इनकी ताकत धीमी पड जाती थी। तब इनको पकड लिया जाता था। इस तरह की एक मछली लंदन के अजायबघर में है। उसकी बिजली का इस्तेमाल करके वहाँ १०० वाट की बिजली की बत्ती जलाई और बुझाई जाती है!

सागर की गहराई में और भी अनोखे जीव हैं जिनका पूरा पता अभी तक मनुष्य को लगा नहीं। लेकिन जितना हमने जान लिया है उतने से हम बता सकते हैं कि समुद्र के जीव अपनी विचित्रता में थल के जीवों से किसी प्रकार भी पीछे नहीं।

अभ्यास

अर्थ बताओ:–

गहराई, बिखेरना, बत्ती, ज्यादातर, पलक, मछुआ, खाल, किस्म, खतरनाक, रुकावट, छिछला, अजायबघर।

जवाब दो:–

१. सागर की गहराइयों में रहनेवाली दो तीन मछलियों की विशेषताएँ बनाओ।

२. बिजली पैदा करनेवाली मछली अपने शत्रुओं से कैसे बच जाती है?

व्याकरण:—

नीचे लिखे वाक्यों को निर्देशानुसार जोडकर एक एक वाक्य बनाओ:—

१. मौत तक हो सकती है । आदमी उसे छूलें । इनकी बिजली इतनी खतरनाक होती है । (कि, अगर, तो- इनका प्रयोग करके)

२. हम ने जान लिया । समुद्र के जीव थल के जीवों से पीछे नहीं । हम बता सकते हैं । (जितना, उतना और कि का प्रयोग करके)

लिंग बदलो:—

दूल्हा, बाघ, शेर, स्वामी, मोरनी, हाथी, सिंह, लेखक, मर्द, भैंस, बादशाह, वर, विद्वान ।

'लग' सहायक क्रिया का प्रयोग विभिन्न अर्थों में करो ।

पाठ ८

अछूत की गुरु दक्षिणा

(एकांकी)

पहला भाग

पात्र-परिचयः–

नंदनः चमार का लडका (दस साल की उम्र)

नंदन की माँ: विधवा चमारिन

धर्मपतिः नंदिग्राम के गुरुकुल का आचार्य

गोपालः भगवान श्रीकृष्ण ग्वाले के रूप में

अन्य छात्र और ग्रामीण

वातावरणः– पूर्व मध्य कालीन भारत

पहला दृश्य

(नंदन की माँ अपनी झोंपडी के बाहर अकेली उदास बैठी है।)

माँ:– (स्वगत्) हे भगवान! क्या मेरे दु:ख का कभी अंत नहीं होगा? माँ–बाप का प्यार मैं ने जाना ही नहीं था। सास-ससुर का साया भी मुझ पर से उठ गया। एक,

पति का सहारा बाकी रहा। वे भी मुझे हमेशा केलिए छोडकर चले गये। अब जीवन में क्या रखा है? लेकिन! नहीं! मुझे जीना होगा। नहीं तो मेरा नंदन अनाथ हो जायगा। आजकल उसे पढने की ज़िद हो गई है। भला, हम चमारों के भाग्य में विद्या कहाँ लिखी है? ब्राह्मणों के मुहल्ले की पाठशाला में उसे घुसने कौन देगा? हम ठहरे अभागे अछूत! हे कृष्ण! तुम्हीं अब हमारे रक्षक हो।

(खुशी के साथ दौडते हुए नंदन का प्रवेश। माँ को आँसू पोंछते देखकर)

नंदन:–माँ! मैं ने पता लगा लिया। नंदिग्राम के गुरु के घर में हमारी जाति के लोग भी पढ सकते हैं।

माँ:– (चिंतित होकर) किसने कहा रे!

नंदन:–उनकी पाठशाला तो ब्राह्मणों के मुहल्ले में नहीं है। फिर वे क्यों नहीं पढायेंगे? मैं कल से पढने जाऊँगा माँ! गुरुजी से बिनती करूँगा। उनकी हर बात मानूँगा। तब भी गुरुजी क्या मुझ पर दया नहीं करेंगे?

माँ:– बेटा! आचार्य धर्मपति का घर तो बहुत दूर है। बीच में वह देखो! बडा जंगल भी पडता है। तुम अकेले शाम

को कैसे लौटोगे! नहीं, मेरे लाल! जंगल में कोई जानवर तुम्हें तंग करे तो? नंदन! मेरा कहना मानो। तुम अपने पिता का पेशा करो। पढने की बात छोडो। यही अच्छा है।

नंदन:- अम्मा! बडे होने के बाद मैं पिताजी का ही काम करूँगा। तब तक पढने में क्या है? माँ! तुम हमेशा कहती हो कि कृष्ण हमारे सहायक हैं। जंगल में भी क्या वे मेरी सहायता नहीं करेंगे? अम्मा! तुम कितनी अच्छी हो। मुझे जाने दो न! रोज जंगल से मीठे मीठे फल तोडकर तुम्हें ला दूँगा।

माँ:- तेरी जैसी मर्जी। हे कृष्ण! तुम्हीं इसकी रक्षा करना मेरे घर का एक ही दीपक है। बुझने न देना!

(पर्दा गिरता है)

दूसरा दृश्य

(शाम का वक्त। नंदन की माँ झोंपडी के बाहर खडी नंदन की प्रतीक्षा कर रही है।)

माँ:- (स्वगत्) नन्दन अब तक लौटा नहीं। पता नहीं, आचार्य ने उसे पाठशाला में स्थान दिया या मारकर मेरे

लाल को भगा दिया । हे भगवान! मेरा बच्चा जंगल में रास्ता तो नहीं भूल गया! चोट खाकर कहीं गिर तो नहीं पडा होगा । हे कृष्ण! दया सागर! मेरे बच्चे की रक्षा करना । आंचल पसारकर तुम से यही भीख मांगती हूँ ।

(अम्मा! अम्मा! पुकारकर ससंतोष दौडते हुए नंदन का प्रवेश । नंदन माँ की कमर से लिपट जाता है ।)

माँ:– (बच्चे के सारे शरीर पर हाथ फेरकर) मेरे लाल! रास्ते में तम्हें कुछ कष्ट तो नहीं हुआ? गुरुजी ने क्या कहा? जंगल में तुम डर तो नहीं गये?

नंदन:–(संतोष के साथ) अम्मा! पहले तो गुरुजी ने इनकार किया । मगर मैं ने बारंबार विनय की, दूर बैठकर पढने की बात कही, रोज लकडी काटकर लाने का वादा किया, तब मान गये । मगर माँ! आते समय जंगल में बडा डर लगा । सबेरे जाते समय तो तुमने जंगल पार कराया था । शाम न होने पर भी जंगल में अंधकार था । इधर उधर से जंगली जानवरों की ध्वनि सुनाई दे रही थी । एक बडे सांप को भी रास्ता काटकर जाते देखा । डर के मारे मैं कृष्ण को पुकारा ।

माँ:– (बच्चे को ज़ोर से चिपकाकर) सच! फिर!

नंदन:–फिर क्या? गोपाल आ गया। एक अच्छा साथी मिल गया। गोपाल ने मुझे जंगल में घुमाया। फल तोडकर खिलाया। (जेब से फल निकालकर माँ को देते हुए) यह देखो! जामुन, लीची, बेर। माँ! तुम्हारेलिए लाया हूँ। वह रोज़ जंगल में गाय चराने केलिए आता है। जंगल में उसके साथ खेलने में बडा मज़ा आता है। अब कोई डर नहीं है अम्मा!

माँ:– (आश्चर्य चकित होकर) पता नहीं किस दयालु ने तुम्हारी मदद की होगी। सब भगवान की कृपा है। चलो! हाथ मुँह धो लो। प्रार्थना का समय हो गया है।

(पर्दा गिरता है)

तीसरा दृश्य

(आचार्य धर्मपति की पाठशाला। गुरुजी अकेले चिंतित बैठे हैं।

गुरुजी:–(स्वगत) ऐसी गृहस्थी से तो सन्यास ही अच्छा है। रोज़ झगडा ही झगडा है। श्रीमती जी का मुँह गुस्से से हमेशा

फूला फूला ही रहता है । खर्च के मारे नाकों दम है । और संततियाँ! एक दो नहीं, पूरे दर्जन हैं । सब की सब लडकियां जो घास फूस की तरह बढती जा रही हैं । इन सब की शादी करानी है । सब की शक्ल-सूरतें ऐसी हैं कि लगता है ब्रह्मा को जब ज़ोर का पेट-दर्द रहा होगा तब इन सबकी रचना की होगी । धन की थैलियाँ चाहिए, थैलियाँ । (कुछ सोचकर) हाँ, एक उपाय सूझा । कल ही तो हमारा जन्म दिवस है । सब छात्रों से इस बहाने एक मोटी रकम वसूल करनी होगी । बस, यही उपाय करना है ।

(सब छात्रों का प्रवेश । गुरुजी को प्रणाम करके बैठ जाते हैं । नन्दन भी ज़रा दूर पर बैठ जाता है)

गुरुजी:- प्यारे बच्चो! आज तुम्हें एक शुभ समाचार सुनाऊँगा ।
सब छात्र:– (एक साथ) सुनाइये गुरुजी !

गुरुजी:–तुम लोग शायद नहीं जानते हो कि कल हमारा जन्म-दिवस है । कल पढाई नहीं होगी । और सुनो! इस अवसर पर अपने घरवालों से कहकर अपनी अपनी श्रद्धा के अनुसार गुरुजी के लिए भेंट, उपहार आदि लाना

तुम्हारा परम धर्म है । समझे ? कल सब लोग गुरु दक्षिण के साथ सबेरे ही आना । आज भी छुट्टी है जाओ! सब कल की तैयारी करो ।

(सब छात्र संतोष के साथ जाते हैं । रास्ते में आपस में चर्चा करते हैं ।)

पहला छात्र:–मैं तो गुरु दक्षिणा में दस स्वर्ण मुद्राएँ ला दूँगा ।

दूसरा छात्र:–अपने पिताजी से कहकर मैं २० एकड भूमि गुरुजी को दान दिलाऊगा ।

तीसरा छात्र:–मेरे पिताजी के पास बहुत गायें हैं । गुरुजी को कम से कम १५ गायों का दान दूँगा ।

पहला छात्र:–अरे! नंदन! तुम गुरुजी को क्या दक्षिणा दोगे ?

दूसरा छात्र:–(मज़ाक करते हुए) चमार के पास मृत जानवरों की चमडी और हड्डी के सिवा और होगा क्या ?

तीसरा छात्र:–अगर बेचारे का बाप होता तो एक जोडा जूता तो कम से कम भेंट करता ।

(सब छात्र हँसते हैं; नंदन को रोना आता है ।)

पहला छात्र:–रोने से क्या होता है ? मेरी अम्मा तो बार बार यही कहती है कि गुरु दक्षिणा दिये बिना पढाई फलेगी नहीं ।

(अन्य छात्र चले जाते हैं । नंदन आँसू पोंछता है ।)

(परदा गिरता है)

अभ्यास

वाक्यों में प्रयोग करो:–

बिनती करना, आंचल पसारना, नाक में दम करना, मज़ाक करना।

प्रश्न:–

१. धर्मपति की पाठशाला में नन्दन कैसे प्रवेश पा सका?

२. गुरुजी ने अपनी गरीबी दूर करने का क्या उपाय किया?

३. संदर्भ बताओ:–

मेरे घर का.....................मुझने न देना।

पाठ ९

काश्मीर

पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो वह काश्मीर में है, ऐसा लोगों का कहना है । बात भी बिलकुल सही है । वहाँ के ऊँचे ऊँचे पहाड़, हरे हरे जंगल, रंग-बिरंगे फूल, निर्मल जल के झील-झरने, इन सबको देखकर, कोई भी कह उठेगा, सचमुच यह पृथ्वी का स्वर्ग ही है ।

काश्मीर राज्य हिमालय की गोद में फैला हुआ है, समुद्र से पांच हज़ार फुट की ऊचाई पर । वहां गरमी के दिनों में भी खूब सरदी पडती है । जाडे के दिनों में तो वहां पहाडियों पर ही नहीं, रास्तों में और घरों की छतों पर भी बरफ़ जम जाती है । काश्मीर की शोभा का आनन्द लूटने केलिये गरमी का मौसम बढिया होता है । तब फल-फूल की भरमार होती है, और घूमने फिरने में बडा मज़ा आता है ।

श्रीनगर काश्मीर की राजधानी है । वह झेलम नदी के दोनों किनारों पर बसा है । नदी पर सात पुल बने हैं जो नगर के दोनों भागों को जोड देते हैं ।

काश्मीर में बडी बडी झीलें हैं जो उस देश की शोभा बढाती हैं। शहर के पास एक झील है जो बहुत सुन्दर लगती है। काश्मीर की सुन्दरता तब प्रत्यक्ष होने लगती है जब हम इस "डल"

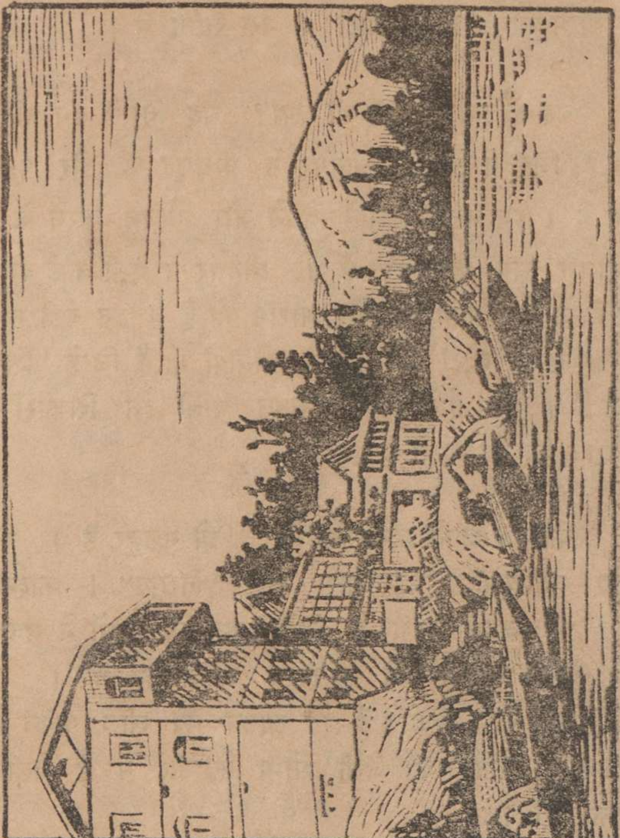

झील की ओर निकलते हैं। यह झील श्रीनगर का प्राण है। यह चार मील लंबी और कोई ढाई मील चौडी है। मगर इसकी अधिक से अधिक गहराई तीस फुट है। इस झील का नगर की ओर वाला भाग 'हाऊस बोटों' से भरा रहता है।

यह हाऊस बोट है भी क्या? यह निराले ढंग की नौका होती है, जिसका उपयोग श्रीनगर में वासगृह के तौर पर किया जाता है। इन नावों में सोने बैठने और भोजन करने के कमरे, स्नानागार सब कुछ होते हैं। श्रीनगर में ऐसी कोई दो हजार नावें हैं जो बडे काम की और आराम की हैं। इन बडी नावों के अलावा छोटी छोटी रंग-बिरंगी डोंगियाँ भी हैं जिन्हें 'शिकारा' कहते हैं। शाम होते ही अनगिनत यात्री इन शिकारों में बैठ कर झील की सैर करते हैं।

काश्मीर अपने बाग-बगीचों केलिये मशहूर है। यहाँ के प्रसिद्ध बगीचे हैं, "शालिमार" और "निशात"। काश्मीर पर प्रकृति की अपार कृपा है जिसे मनुष्य के हाथों ने संवारा भी है। इन बगीचों की सुन्दरता अलौकिक है। गुलाब यहाँ सैकडों तरह के होते हैं। सामने की झीलें कमल से भरी रहती हैं। कमलों की जैसी शोभा काश्मीर में है वैसी शोभा अन्यत्र नहीं।

शालिमार और निशात में जगह जगह पर रंग-बिरंगे फूलों के पौधों की क्यारियाँ हैं। इनके बीचों बीच सुन्दर चश्में हैं जिनका पानी कई फौवारों से होकर बाहर निकलता है। इधर उधर तरह तरह के फलों के पेड हैं जो बहुत सुन्दर लगते हैं। लेकिन इन बगीचों की शान उन ऊँचे पेडों की है जो "चिनार" कहलाते हैं। चिनार काश्मीर की सुषमा के जीवित स्तंभ हैं। चारों ओर की बरफीली चोटियों की छटा बागों की शोभा बढा देती है।

काश्मीर तो रहा भूलोक का स्वर्ग। लेकिन काश्मीरी लोग बडे गरीब होते हैं। भूमि इतनी उपजाऊ होने पर भी जनता को भर पेट भोजन भी नहीं मिलता यह क्यों? कहा जाता है कि उधर लगान ज्यादा होती है। सुना है कि एक झोंपडी तक बन- बीस, पच्चीस वाने की अनुमति केलिये २०-२५ रुपया देना पडता है। साधारण जनता खेती बारी करके और भेड पाल कर पेट पालती है। यात्रियों की सेवा शुश्रूषा करके कुछ कमाने की इच्छा प्रबल रहती है।

काश्मीर के फल-मेवे, ऊन तथा रेशम के कपडे बहुत मशहूर हैं। यहाँ के दुशाले दुनियाँ भर में प्रसिद्ध हैं। पक्षियों के पंखों से एक तरह का ऊन यहाँ तैयार किया जाता है जो बहुत मुलायम और गरम होता है।

दस्तकारी में काश्मीरी बडे निपुण होते हैं। लकडी और चाँदी की बनी चीज़ें बहुत सुंदर लगती हैं।

काश्मीर की प्रत्येक बात में एक अपूर्व सौन्दर्य है जो उसे भूलोक का स्वर्ग बना देता है।

अभ्यास

अर्थ बताओ:–

सही, गोद, सरदी, मौसम, चश्मा, फ़ौवारा, मुलायम, भरमार, दस्तकारी।

वाक्यों में प्रयोग करो:–

आनन्द लूटना, पेट पालना।

जवाब दो:–

१. काश्मीर कहाँ है?

२. हाऊस बोट किसे कहते हैं?

३. काश्मीर के प्रसिद्ध बगीचे कौन कौन हैं?

४. काश्मीर की दस्तकारिया क्या क्या हैं?

५. काश्मीर की प्राकृतिक सुन्दरता कैसी है?

६. कामीर के लोग अपने पेट कैसे पालते हैं।

व्याकरण:-

उलटे अर्थवाले शब्द लिखो:-

सरदी, लंबा, मोटा, काला, चौडा, साँझ ।

वाच्य बदलो:-

१. आप को यह काम करना चाहिए ।

२. श्रीनगर को काश्मीर की राजधानी बनायी है ।

३. वे काम कर सके ।

४. हाऊस बोट का उपयोग वास-गृह के तौर पर किया जाता है ।

५. मनुष्य के हाथों ने बगीचों को संवारा है ।

उचित वाक्य खंडों को मिलाकर एक एक वाक्य बनाओ:-

१. इधर उधर तरह तरह के पेड होते हैं	कि वहाँ लगान ज्यादा होती है ।
२. कहा जाता है	जब हम 'डल' झील की ओर निकलते हैं ।
३. काश्मीर की सुन्दरता तब प्रत्यक्ष होने लगती है	जो बहुत सुन्दर लगते हैं ।

4

पाठ १०

तिब्बत

भारत के उत्तर में तिब्बत का विस्तीर्ण पठार है। वह समुद्र की सतह से दो तीन मील ऊँचा है। दुनियाँ भर में आबादीवाला इतना ऊँचा पठार और कहीं नहीं। इसलिए तिब्बत दुनियाँ का छप्पर कहलाता है।

तिब्बत का बहुत सा भाग ऊसर है और कुछ भाग पहाडी। वह देश जितना ऊँचा है उतना ही ठंडा भी है। पर्वत के शिखर प्रायः बर्फ से ढके रहते हैं। नदी नालों में बर्फ जमी रहती है। ज़मीन पथरीली है और इसलिए वहाँ पेड-पौधे मुश्किल से उगते हैं। तिब्बत की हवा सूखी होती है। फिर भी घाटियों में खेती होती है।

इस देश में मंगोलियन वंश के लोग रहते हैं। उनका रंग तपे हुए तांबे की तरह लाल होता है। उनकी नाक चपटी और आंखें छोटी होती हैं। गालों की हड्डियाँ कुछ उभरी हुई हैं। तिब्बत के निवासियों के दाढी मूछें ज़्यादा नहीं होतीं। जो थोडे बहुत बाल मुँह पर उगते भी हैं, उनको उखाड देते हैं।

इसकेलिए वे हमेशा हाथ में चिमटी रखते हैं । तो कुछ समय के बाद बालों का निकलना ही बन्द हो जाता है ।

तिब्बत के अधिकांश लोग गरीब हैं । उनका मुख्य पेशा पशुपालन और खेती है । घाटियों में जमीन आम तौर पर अच्छी होती है । वहाँ थे लोग खेती करते हैं । तिब्बत में सोना, नमक और सोहागे की खानें भी हैं ।

तिब्बती लोग भेड, बकरी, गधा और याक पालते हैं । याक एक अजीब जानवर है । देखने में वह गौ जैसी होती है, पर उसकी पूँछ घोडे की जैसी रहती है। शरीर पर भेड-बकरियों के समान लम्बे और काले बाल होते हैं । इस कारण याक वहाँ की सर्दी बर्दाश्त कर सकती है । वह बहुत मजबूत होती है और पहाडों पर बिना पैर फिसले चढ सकती है ।

याक बहुत ही उपयोगी जानवर है । तिब्बत के मुसाफिर बोझ ले जाने केलिए याक का ही उपयोग करते हैं । लोग उसका दूध पीते हैं और उसकी खाल से कपडे भी बना लेते हैं ।

तिब्बत के लोग ऊन के बने कपडे पहनते हैं । सर्दियों में बकरों की खाल के कपडे पहनते हैं और खाल का बालोंवाला

हिस्सा अंदर की ओर रखते हैं । उन लोगों को लाल, बैंगनी और नीले आदि भडकीले रंग बहुत पसंद हैं ।

बहुत से तिब्बती याक के बालों से तैयार किये हुए तंबुओं में रहते हैं । घर लकडी और पत्थर के होते हैं । घरों में खिडकियाँ नहीं होतीं । छत बहुत नीची रहती है । तो घर भीतर से गरम रहते हैं ।

तिब्बती लोग गेहूँ, जौ, सेम, और मटर को इकट्ठा पीसकर उसके आटे की रोटी बनाते हैं । वे कच्चा मांस बडे चाव से खाते हैं । उबला हुआ मांस भी अध कच्चा ही खाते हैं । उनकी चाय में न दूध पडता है, न चीनी । वे चाय में दूध की जगह मक्खन और चीनी की जगह नमक डालते हैं । मक्खन जितना पुराना हो उतना ही अच्छा ।

वहाँ के बच्चों की आदतें निराली होती हैं । वे न तो कभी नहाते हैं, न कभी दांत साफ़ करते हैं । शरीर पर मैल जमी रहती है; फिर भी वे नहाते नहीं । कच्चा मांस खाते हैं; फिर भी दांत साफ़ नहीं करते । सिर पर तेल नहीं लगाते और बालों में कंघी नहीं करते । हमारे देश के बच्चों से वे कितने भिन्न होते हैं!

उस देश में अभिवादन का ढंग भी कुछ निराला होता है । जब हम किसी से मिलते हैं तो हाथ जोडकर प्रणाम करते हैं ।

वहाँ के लोग अपनी जीभ को दूसरे की जीभ से मिलाते हैं। सूचना यह है कि जीभ से निन्दा नहीं निकलेगी।

तिब्बती लोग बौद्ध हैं। वहाँ के बौद्ध-भिक्षु लामा कहलाते हैं। लामाओं की संख्या इतनी अधिक है कि हम तिब्बत को लामाओं का देश कह सकते हैं। लामाओं का मुखिया दलाई लामा कहलाता है। दलाई लामा तिब्बत का राजा है। उसका जनता पर बडा अधिकार है।

दलाई लामा का चुनाव बडा ही विचित्र है। एक दलाई लामा की मृत्यु के समय जो बालक देश में पैदा होता है, वही दलाई लामा बनता है। तिब्बतियों का विश्वास है कि जिस दलाई लामा का देहांत होता है, उसकी आत्मा दूसरी जगह शरीर धारण करती है। अगर दलाई लामा की मृत्यु के समय देश में कई बच्चे जन्म लेते हैं तो चुनाव का तरीका कुछ और होता है। नये जनमे बच्चों के नाम अलग अलग कागज के पुरजों में लिखे जाते हैं। एक आदमी आँखें बंद करके उनमें से कोई पुरजा उठा लेता है। उसपर जिस लडके का नाम लिखा रहता है वही दलाई लामा माना जाता है।

अभ्यास

अर्थ बताओ:–

पठार, सतह, छप्पर, पथरीला, सूखा, चपडा, उभरा, सोहागा, फिसलना, खाल, उबालना, निराला, उखाडना ।

वाक्यों में प्रयोग करो:–

उबला हुआ, बरदाश्त करना, कंघी करना, आम तौर पर ।

उल्टे अर्थवाले शब्द लिखो:–

ऊसर, उभरा, कच्चा, पथरीला ।

प्रश्न:–

१. तिब्बत क्यों दुनियाँ का छप्पर कहलाता है?
२. तिब्बत के लोगों की रहन-सहन कैसी होती है?
३. तिब्बत के लोगों का मुख्य पेशा क्या है?
४. तिब्बतियों के अभिवादन करने का ढंग क्या है?
५. दलाई लामा कौन है?
६. दलाई लामा का चुनाव कैसे होता है?

व्याकरण:–

शुद्ध करो:–

१. मास्टर ने मुझको एक पश्न किया ।
२. वह राम को डरता है ।

३. उसको मैं वह घर का कमरा में ले गया ।

४. आप दुःखी लोगों में दया दिखाना चाहिए ।

शब्दों को ठीक स्थान पर रखकर सही वाक्य बनाओः—

१. और घर के पत्थर लकडी होते हैं ।

२. वहां की निराली आदतें बच्चों के होती हैं ।

३. बडा अधिकार पर उसका जनता है ।

४. विचित्र चुनाव का दलाई लामा बडा ही है ।

पाठ ११

अछूत की गुरुदक्षिणा

दूसरा भाग

चौथा दृश्य

(आचार्य धर्मपति के घर में जन्म दिवस की तैयारियाँ हो रही हैं। विविध पकवान बनाये जा रहे हैं। गुरुजी मंच पर विराजमान हैं। छात्र सब एक एक करके गुरुदक्षिणा समर्पित करके प्रणाम कर रहे हैं। छात्रों के घरवाले भी इस उत्सव में सम्मिलित हैं। अंत में नन्दन आता है। एक लोटा दूध गुरुजी के पास रखकर भक्ति के साथ प्रणाम करता है।)

नन्दनः—गुरुजी! मैं गरीब हूँ। आप से कुछ भी छिपा नहीं है। अतः स्वर्ण की जगह दूध ही मैं रख पा रहा हूँ। इस में जो कुछ है वह श्रद्धा ही है। इसे स्वीकार कर मुझे आशीर्वाद दीजिए।

गुरुजीः—(किसी को बुलाते हुए) अरे! कोई इस दूध को अन्दर ले जाओ। (एक छात्र दूध का लोटा अन्दर ले जाता है।) नन्दन! तुम बाहर उस पेड के नीचे बैठे रहो। सब के भोजन के बाद तुमको भी खिलाया जायगा। समझे?

नन्दनः–गुरुजी की जैसी आज्ञा ।

(इतने में भीतर से कुछ कोलाहल सुनाई देता है—जैसेः—गजब हो गया, कैसा जादू है! मंत्र फूँका गया है, बापरे! महा आश्चर्य! आदि)

गुरुजीः–अरे! क्या हुआ? हमारे जन्म दिवस में भी यह कोलाहल? कोई जल गया क्या? क्या बात है?

(रसोई घर के कर्मकार और कुछ छात्र दूध का लोटा लाकर गुरु के सामने रखते हैं ।)

पहलाः–(आश्चर्य और भय के साथ) गुरुजी! इस दूध में कोई जादू है ।

दूसराः–इस में कोई मंत्र फूंका गया है गुरुजी! यह उस चमार लडके का काम है ।

गुरुजीः–जादू! मंत्र! क्या बक रहे हो? अरे! साफ़ साफ़ बताओ तो । क्या बात है?

तीसराः–गुरुजी, घर के सारे छोटे बडे बरतन भर गये । मगर इस लोटे का दूध कम नहीं होता है । देखिये न! अन्दर आकर ! दूध ही दूध है हर कहीं ।

पहलाः–गुरुजी! इस में कोई मारक जादू है । आखिर जाति का चमार ठहरा । मंत्र मंत्र से ये लोग हत्या भी करते हैं ।

(गुरुजी अन्दर जाते हैं और आश्चर्य के साथ बाहर आते हैं ।)

गुरुजी:–आश्चर्य! बापरे! इतना दूध! जीवन में पहली बार देख रहा हूँ। यह कैसा चमत्कार है? बुलाओ उस चमार के बच्चे को! हमारे जन्म दिवस में यह जादू! यह अधर्म! कहाँ है वह?

(नंदन भयभीत मुद्रा में गुरुजी के सामने आता है।)

गुरुजी:–क्यों रे! चमार के बच्चे! आज तुमने यह सब क्या किया है? सच सच बताओ कि यह लोटा किसने दिया? दूध कहाँ से मिला? सारे घर में दूध की नदी बह रही है। फिर भी लोटे में दूध कम नहीं हो रहा है। सच्ची बात नहीं बताओगे तो मार मार कर चमडी निकाली जायगी।

नंदन:–(अश्रुभरे नेत्रों से) गुरुजी, आप से मैं कभी झूठ नहीं बोलूँगा। मैं ने गुरु दक्षिणा की बात अपनी अम्मा से कही। अम्मा की हालत मैं जानता ही था। फिर भी जब मैं ने हठ पकडी तो अम्मा ने मेरे दोस्त गोपाल से सहायता मांगने की सलाह दी।

गुरुजी:–गोपाल? कौन गोपाल? कहाँ रहता है वह?

नंदन:–इसी जंगल में रहता है। रोज गाय चराने के लिए आता है। वहीं रोज़ मैं गोपाल से मिलता हूँ, खेलता हूँ। शाम को गोपाल ही मुझे जंगल के पार पहुँचाता है।

गुरुजी:-इस जंगल में गोपाल? बदमाश? झूठ बोलते हो? (छडी से मारते हुए) सच बोलो, यह दूध किसने तुमको दिया है?

नंदन:-(रोते हुए) हाँ गुरुजी, गोपाल ने ही दिया है। गुरुजी आप मुझपर विश्वास कीजिए। नहीं तो चलिए मेरे साथ। मैं गोपाल को दिखा दूँगा। मैं सत्य ही कह रहा हूँ गुरुजी। मेरी बात सुनकर गोपाल ने कहा कि "हम गरीबों के पास सोना चाँदी कहाँ? इसलिए यह दूध लेकर गुरुदक्षिणा दो। गुरुजी तुम्हें आशीर्वाद देंगे।"

गुरुजी:-(क्रोध के साथ) आशीर्वाद नहीं। तुम्हें मैं शाप दूँगा। (मारते हुए) कैसी बात बना रहे हो? गोपालने दूध दिया? अब कहोगे कि भगवान कृष्ण ने ही तुम जैसे चमार को दर्शन दिये, वरदान दिये। नीच जाति सर्वत्र नीचता ही करेगी। क्या कुत्ते की पूँछ सीधी हो जाती है? (सब से) इस शैतान को छोडो मत। मारो इसे। सत्य कहलवाकर ही छोडो।

(गुरुजी आश्चर्य के साथ लोटे की ओर देखते हैं। अन्य छात्रों के साथ उत्सव में आये हुए बडे लोग भी नन्दन को मारते हैं। समाचार सुनकर गाँव के लोगों की भी भीड लग जाती है।)

गुरुजी:–बोल! अब भी सच सच बोल! पापी? दुष्ट! नीच!

(मार खा खाकर नन्दन ज़मीन पर गिर पडता है । उसके कपडे सब फट गये हैं ।)

नन्दन:–(सिसक सिसकर रोते हुए) गुरुजी, मैं सत्य ही कह रहा हूँ । गुरुजी! मैं ने कोई अपराध नहीं किया है । गुरुजी! मुझपर अगर विश्वास नहीं तो मेरे साथ चलिए! मैं गोपाल को ज़रूर दिखा दूँगा ।

एक बूढा ग्रामीण:–आचार्य जी, बात तो विचित्र है ही । मगर पता भी तो लगाना है । इसलिए हम सब चलें इसके साथ ।

गुरुजी:–इतना कष्ट उठाकर कहाँ जाने पर भी अगर झूठ झूठ ही रहा तो?

नन्दन:–तब मुझे जितना चाहें मारिए! मार डालिए! गुरुजी! मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ । गोपाल को मैं ज़रूर दिखा दूँगा !

गुरुजी:–तब ठीक है, चलो! इस रहस्य का पता लगाना तो है ही । नहीं तो ये नीच चमार लोग हम उच्चकुलवालों को जीने भी नहीं देंगे ।

(बीच जंगल में सब पहूँच जाते हैं । सब थके हैं जंगल में भय भी लगता है ।)

गुरुजीः–बापरे! कैसा घना जंगल है। यहाँ भला कोई मनुष्य रह भी सकता है? अरे! नंदन यहाँ कहाँ है तुम्हारा गोपाल और गोविन्द?

नंदनः–गोपाल! गोपाल!

(फिर ज़ोर ज़ोर से बारंबार बुलाता रहता है।)

गुरुजीः–मैं ने पहले ही कहा था कि यह चमार का बच्चा झूठ बोल रहा है। अब इतनी दूर पैदल चलाकर भी इस दुष्ट ने हम को दुःख दिया। (क्रोध से) अरे! चंडाल! अब भी सच बोलता है कि नहीं? यहाँ तेरा गोपाल नहीं, तेरा काल रहता है। (मारते हुए) कहाँ है रे! तेरा गोपाल? अब द्वारका से गरुड पर चढ़ कर स्वयं कृष्ण भगवान आ जावें तो भी हम तुम्हें जीवित छोडेंगे नहीं। मारो सब लोग इसे।

("पापी! गुरुद्रोही!" कहकर और लोग भी मारते हैं।)

नंदनः–(रोते रोते आर्तस्वर में) तुम कहाँ हो गोपाल! तुम्हारा ही दिया हुआ दूध मैं ने नैवेद्य की तरह गुरु चरणों में रखा था। उसका फल अब तुम्हीं आकर देखो। मेरे शरीर पर मार की निशानियाँ भरी पडी हैं। रोज एक बार बुलाने से ही तुम आया करते थे। मेरे साथ खेलते थे। मुझे फल तोडकर खिलाया करते थे।

आज मुझ पर विपत्ति आ पड़ी है। गुरुजी मुझे मार डालने पर तुले हुए हैं। मैं कब से पुकार रहा हूँ, कितनी वेदना से पुकार रहा हूँ। गोपाल! आज तुम इतने निर्दय कैसे बन गये हो? आओ! गोपाल! जलदी आओ! तुम्हारा दोस्त नंदन मर रहा है।

(जंगल के भीतर से गम्भीर ध्वनि सुनाई दे रही है। वहाँ एक अलौकिक प्रभा फैलने लगती है। सब चकित और भयभीत होकर सुन रहे हैं। नन्दन स्वर पहचान लेता है। उसके चेहरे पर प्रसन्नता की लहर है।)

"प्यारे नन्दन! मैं कहीं दूर नहीं हूँ। तुम्हारे पास ही हुँ। तुम मेरे सच्चे भक्त हो। तुम्हारे गुरु और गांववाले पापी हैं जो तुम्हें मार रहे हैं। वे मेरे दर्शन के अधिकारी नहीं हैं। सच्चे भक्त को ही मैं दर्शन देता हूँ। तुम दुःखी मत होओ। डरो मत। ये पापी लोग तुम्हारा कुछ भी विगाड नहीं सकते हैं। तुम घर जाओ। माँ तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है।"

(प्रभा विलीन हो जाती है)

(सब लोग भक्ति-श्रद्धा से नन्दन को देखते हैं। गुरुजी नन्दन को गले लगाते हैं।)

गुरुजी:-(पश्चात्ताप के आंसू बहाते हुए) नन्दन! तुम इतने महान हो? आज मेरी आंखें खुलीं। नन्दन! तुम मेरे गुरुकुल के

सर्वोत्तम छात्र हो। तुम्हारी गुरुदक्षिणा ही सब से पवित्र है। तुम अपने गुरु को क्षमा करो नन्दन!

(गुरुजी नन्दन के सामने सर झुकाते हैं। सारे गांववाले गुरुजी का अनुकरण करते हैं।)

नन्दनः-(विनय के साथ) गुरुजी! आप मुझे लज्जित न करें। मैं आपका वही पुराना शिष्य हूँ। मैं आप का आशीर्वाद ही चाहता हूँ।

(नन्दन गुरु के चरणों की ओर झुकता है। गुरुजी उसे तुरंत गोद में उठा लेते हैं

(परदा गिरता है)

अभ्यास

वाक्यों में प्रयोग करो:-

गजब होना, बात बनाना, तुला हुआ, हठ पकडना।

प्रश्नः- १. नन्दन ने गुरुदक्षिणा के रूप में क्या दिया?

२. गुरुजी ने नन्दन को क्यों पीटा?

प्रसंग बताओ:-

१. इस में जो कुछ है वह श्रद्धा ही है।

२. क्या कुत्ते की पूँछ सीधी हो जाती है?

पात्र परिचय दो:- विधवा, चमारिन, धर्मपति।

पाठ १२

छत्रपति शिवाजी

भारत के छत्रपतियों में शिवाजी का नाम बहुत मशहूर है। उनका जन्म एक मामूली परिवार में हुआ था। माता जीजाबाई

और दादा कोंडदेव की देखरेख में उनका बचपन बीत गया। अपनी माताजी के प्रभाव एवं अपनी वीरता से ही वे एक विशाल साम्राज्य की नींव डाल सके।

वे पराक्रमी तो थे ही, साथ ही साथ उनका दिमाग भी तेज था। वे जल्दी ही निर्णय करते थे और जल्दी ही काम करते थे। वे वीरता का मुकाबिला वीरता से और चालाकी का चालाकी से करते थे। मुगलों से उनकी भारी शत्रुता थी। जब औरंगजेब ने देखा कि शिवाजी काबू में नहीं आते, तो उसने एक चाल चली। मीठी मीठी बातें करके शिवाजी को अपने दरबार में आने का न्योता दिया। उधर बादशाह ने उनका अपमान किया। शिवाजी को बडा गुस्सा आया। उन्होंने भरे दरबार में अपनी तलवार निकाल ली। लेकिन वे मकडी के जाल में फँस चुके थे। औरंगजेब ने उन्हें कैद कर लिया।

शिवाजी नहीं घबराये। अपनी बुद्धिमानी एवं साहस से वे जेल से निकल भागे। सन्यासी का वेष धारण कर वे दक्षिण की ओर चले और अपने राज्य में पहुँच गये। राज्य में लौट कर उन्होंने औरंगजेब से खुलकर लडाई छेड दी।

अब औरंगजेब ने अपने सेनापति अफजल खान को शिवाजी से लडने केलिये भेजा। वह एक भारी फौज लेकर आ धमका।

शिवाजी की ताकत का पता चला तो उसे खुल कर लड़ने की हिम्मत न रही। उसने चालाकी से शिवाजी को मारना चाहा। उसे पता नहीं था कि शिवाजी उसके भी उस्ताद हैं।

खैर, अफ़जल खान ने सुलह की चिट्ठी भेजी। उसमें लिखा था—"मैं आप से किसी एकांत स्थान में मिलना चाहता हूँ। मेरा उद्देश है आप से दोस्ती करना। इसलिये अपने साथ कोई हथियार न लाऊँगा। आप भी कोई हथियार न लायें तो अच्छा होगा। आपस में मिलकर हम सुलह की बात करेंगे।"

शिवाजी ने तुरंत ही अफ़ज़ल खान के दिल के चोर को पकड लिया। उन्होंने वचन दिया कि मैं तुमसे मिलने को तैयार हूँ। लेकिन जाने से पहले हाथों में खुफ़िया हथियार पहनना नहीं भूले।

अफ़जल खान आया। दोनों गले मिलने केलिये आगे बढे। अफ़ज़ल खान भी अपने साथ खुफिया कटार लाया था। निकट पहुँचते ही उसने कटार से वार करना चाहा। शिवाजी धोखे की प्रतीक्षा कर ही रहे थे और तैयार भी थे। एक ही लपक में शिवाजी ने बघनखा अफ़जल खान के कलेजे में घुसेड दिया। उसके शरीर से रूह निकल गयी।

तुरंत ही शिवाजीने "हर हर महादेव" का नारा लगाया। चारों ओर से सैकडों मराठे सिपाही निकल आये और मुसलमानों पर टूट पडे। युद्ध के नारे से आकाश गूँज उठा। मुसलमानों की सेना की भारी क्षति हुई और शिवाजी जीत गये।

अभ्यास

अर्थ बताओ:–

दिमाग, देखरेख, ताकत, धमकाना, खुफिया, लपक, रूह।

वाक्यों में प्रयोग करो:–

नींव डालना, मकडी के जाल में फँसना, रूह निकल जाना, चाल चलना, दिल के चोर को पकडना, गले मिलना, लडाई छेडना।

जवाब दो:–

१. शिवाजी का जन्म कहाँ हुआ?
२. शिवाजी का स्वभाव कैसा था?
३. औरंगजेब ने शिवाजी को फँसाने के लिए क्या उपाय किया?
४. 'शिवाजी ने अफजल खान के दिल के चोर को पकड लिया।' —इस घटना का वर्णन करो।

व्याकरणः–

वाच्य बदलोः–

१. अफजल खान ने सुलह की चिट्ठी भेजी ।

२. शिवाजी ने औरंगज़ेब से लडाई छेड दी ।

३. ये चीज़ें कल भेजी जायेंगी ।

४. शिवाजी को दरबार में आने का न्योता दिया गया ।

पूरा करोः– (कर्मवाच्य क्रियाओं से)

१. राम से यह काम —— ।

२. तुम्हारे भाई को दूध — — ।

३. ये पुस्तकें मेज़ पर — —

पाठ १३

धरती का बेटा

आसमान में चाँद धरती के सबसे निकट है। इसलिए वह सूरज जितना बडा दिखाई देता है। पर दर असल वह उतना बडा नहीं। सूरज की तो बात क्या, वह धरती से भी छोटा है। चाँद का व्यास केवल २१६० मील है। अगर चाँद जैसे १३ गोले मिलाकर एक गोला बनाया जाये तब कहीं वह धरती के बराबर होगा। वह हमारी धरती से करीब ढाई लाख मील दूर है।

चाँद दर असल धरती का बेटा है। पुराने जमाने में, आज से करीब पाँच अरब साल पहले, धरती का एक टुकडा उससे टूट कर अलग हो गया और धरती के चारों ओर घूमने लगा। यही हमारा चाँद है। यह धरती के चारों ओर चक्कर लगाता है। इसलिये धरती का उपग्रह कहलाता है।

चाँद एक बुझा हुआ गोला है। वह बिलकुल ठंडा है। रात को वह चमकता इसलिये है कि वह सूरज की किरणों का परावर्तन कर देता है।

चाँद में किसी तरह का वायु-मंडल नहीं पाया जाता। न वहाँ पर हवा है, न पानी है, न किसी तरह के जीव जन्तु हैं। न ही आदमी जैसा कोई प्राणी है। वायुमंडल न होने के कारण ही वहाँ पर कोई प्राणी जिन्दा नहीं रह सकता।

जिस तरह धरती सूरज के चारों ओर घूमती है उसी तरह चाँद धरती का चक्कर लगाता है। चाँद को धरती का चक्कर पूरा करने में २७ दिन से कुछ ज्यादा समय लग जाता है। धरती की परिक्रमा से ऋतुएँ बदलती हैं और चाँद की परिक्रमा से पक्ष। चाँद पर हमारे जैसे १४ दिनों का एक दिन और उतने ही समय की एक रात होती है। यानी वहाँ एक पक्ष तक सूरज बराबर चमकता है और एक पक्ष तक बिलकुल नहीं।

चाँद अपनी कीली पर घूमता है और उसी दिशा में धरती की परिक्रमा भी करता है। इसी कारण चाँद का एक ही भाग सदा धरती की ओर रहता है। इसलिए चाँद का १०० पीछे ४१ भाग ऐसा है जो धरती से आज तक नहीं देखा जा सका है।

चाँद की सतह पीले रंग की चट्टानों की बनी हुई है। चाँद की ओर देखने से इसमें कलंक या दाग दिखाई देते हैं। ये कलंक धरती से आदमी या हिरण जैसे दिखाई पडते हैं। लेकिन

ये कलंक दर असल चाँद के ऊपर के छोटे बडे पहाड, वहाँ के चौडे मैदान और खाइयाँ ही हैं ।

चाँद की ज़मीन बडी ऊबड खाबड है । उसमें छोटे बडे खड्डे और टेकरे हैं । वहाँ धरती के जैसे पहाड भी हैं । कुछ पहाड तो हिमालय पहाड से भी ज़्यादा ऊँचे होते हैं । चाँद के ऊपर की सबसे अजीब चीज़ उसके ज्वालामुखी पहाड हैं । ये पहाड़ गोलाई लिये हुए हैं । इसमें पहाडियाँ इधर उधर फैली होती हैं और एक ऊँची चोटी बीच में होती है । इन पहाडियों के बीच में मैदान होते हैं । चाँद के ज़्वालामुखियों में कोई भी सक्रिय नहीं, सब के सब प्रसुप्त हैं ।

चाँद के ये ज्वालामुखी करीब तीस हज़ार हैं । इनमें से कुछ तो इतने छोटे हैं कि उनकी लंबाई केवल एक हज़ार फुट है और कुछ इतने बडे हैं कि उनकी लंबाई २५० मील है । चाँद के इन ज्वालामुखियों की सुन्दरता कुछ और ही है ।

दूर में खडा यह चाँद धरती के निवासियों का ध्यान अपनी ओर खींचता है । बच्चों के वह मामा है । कवियों को वह अच्छा उपमान देता है । अब वह वैज्ञानिकों को भी आकर्षित करने लगा है । चाँद पर कब्जा करने का उनका इरादा है । इस विषय में अमेरिकी और रूसी वैज्ञानिकों में काफ़ी होड लगी है । प्रतीत होता है कि वह दिन दूर नहीं जब मनुष्य का अधिकार चाँद पर भी जम जायगा ।

अभ्यास

अर्थ बताओः— दरअसल, ज्वालामुखी ।

वाक्यों में प्रयोग करोः—

दिखाई देना, पाया जाना, होड लगना ।

जवाब दोः— १. चांद धरती से कितनी दूरी पर है?

२. चांद की उत्पत्ति कैसे हुई?

३. चांद कैसे चमकता है?

४. चांद की सतह पर क्या क्या हैं?

खाली जगहों को भरोः—

१. चांद का——२१६० मील है ।

२. उसके ऊपर की अजीब चीज——पहाड हैं ।

३. चांद के ज्वालामुखियों में एक भी——नहीं ।

दोनों तरफ़ के वाक्यखंडों को मिलाकर एक एक वाक्य बनाओः—

१. जैसे धरती की परिक्रमा से ऋतुएँ बदलती हैं	चांद धरती का उपग्रह कहलाता है ।
२. धरती के चारों ओर परिक्रमा करने से	कि उनकी लंबाई केवल एक हजार फुट है ।
३. ज्वालामुखियों में कुछ तो इतने छोटे हैं	जब मनुष्य का अधिकार चांद पर भी जम जायगा ।
४. वह दिन दूर नहीं है	वैसे चांद की परिक्रमा से पक्ष भी ।

पाठ १४

हम कैसे सुखी बनें?

भारत में सात लाख देहात हैं, शहर बहुत थोडे हैं। भारत के लगभग अस्सी फीसदी लोग गाँवों में रहते हैं। इसका मतलब यह है कि हमारी साधारण जनता देहाती होती है। अगर हमें सुखी होना हो तो देहातों को सुखी बनाना चाहिये।

अब देहातों की क्या हालत है? देहात बरबाद होती जा रही है। देहात की लक्ष्मी शहर की ओर दौडी चली जा रही है। अगर हम उसे भागने से रोक सकें तो हमारे देहाती सुखी रहेंगे।

अब यह प्रश्न उठता है, हम उसे कैसे रोकें? अच्छा, हम उसपर विचार करेंगे। ग्रामलक्ष्मी के चले जाने का पहला रास्ता है आडंबर। व्याह-शादी की बात लो। कितना फिजूल खर्च हुआ करता है। उस केलिये कितने लोग कर्ज भी लेते हैं। अंत में क्या होता है? लडकी की शादी तो बडे ठाट-बाट से होती है। मगर माँ-बाप बडी मुसीबत में पड जाते हैं।

दूसरा रास्ता बाजार का है। देहाती अपने गाँव की उपज बेचकर शहर से माल खरीदते हैं। इसमें दो प्रकार

के नुकसान होते हैं । एक बेचने का और दूसरा खरीदने का । देहातियों को भर सक अपनी ज़रूरी चीज़ें अपने गाँव में ही बनानी चाहिये और एक चीज़ की जगह दूसरी चीज़ ले लेनी चाहिये । तभी तो गाँव की लक्ष्मी गाँव में ही रहेगी ।

देहातियों के कुछ बुरे व्यसन होते हैं जैसे बीडी फूँकना, शराब पीना आदि । शराबी झगडालू होता है । झगडे से मान और धन नष्ट हो जाते हैं । इन बुरे व्यसनों से दूर रहना ही अच्छा है ।

अगर गाँव में कोई झगडा हो जाय तो गाँव के चार पांच भले आदमी बैठकर उसका फैसला करें । जिस प्रकार अनाज और कपडे गाँव ही के हों, उसी प्रकार न्याय भी गाँव का ही हो । ऐसा होने से अदालत जाने के फिजूल खर्च से बच सकते हैं ।

देहाती का दुश्मन होता है साहूकार । व्याज के रूप में वह देहाती का खून चूसता है । साहूकार से सावधान रहना चाहिये । पर वह कैसे हो सकता है? अच्छा, हम बतायेंगे । किसी न किसी काम धंधे में लगे रहकर भर सक परिश्रम करते रहना चाहिये । याद रहे कि आलस्य दरिद्रता की जड है । फिर, हमें अपनी आवश्यकताओं को कम कर देना चाहिये । सादा जीवन और उच्च विचार, यह हमारे ऋषियों का उपदेश रहा है । हमारे राष्ट्रपिता

गांधीजी ने अपने आचरणों से हमें यह आदर्श दिखा दिया भी है। भर सक परिश्रम करना और सादा जीवन बिताना, इन दोनों उपायों से हमें कर्ज लेने की नौबत ही न आयगी ।

गाँव की लक्ष्मी क्यों बाहर जा रही है, उसका फिक्र तो ऊपर किया गया है । उन रास्तों को रोक देने से देहात संपन्न हो जायगा । तभी तो हमारे देश में ऐश्वर्य की देवी नाचने लगेगी और हम सुखी बनेंगे ।

जय हिन्द!

अभ्यास

अर्थ बताओ:–

फीसदी, फिजूल, नुकसान, मुसीबत, नौबत, व्यसन ।

वाक्यों में प्रयोग करो:–

बरबाद होना, फिजूल खर्च करना, कर्ज लेना ।

जवाब दो:–

१. देहातियों के झगड़ों का निर्णय कैसे हो सकता है?
२. ग्रामीणों को सुखी बनाने केलिए हमें किन किन बातों पर ध्यान रखना चाहिए ।
३. साहूकार देहाती का दुश्मन क्यों माना जाता है?
४. देहातियों में कौन सी बुरी आदतें हैं?
५. ग्रामवासी कैसे मितव्ययी हो सकते हैं?

व्याकरणः–

शुद्ध करोः–

१. राम उसका काम करता है ।
२. मैं मेरे भाई को भेजता हूँ ।
३. वहाँ के लोग उनकी भाषा बोलते हैं ।
४. गोपाल और राम उसका उसका काम करते हैं ।
५. तुम तुम्हारे मन में देश-भक्ति का भाव उत्पन्न करो ।

कोष्ठकों में दिये हुए प्रत्ययों से खाली जगहों को भरोः–

१. आज मास्टर ने मुझ—एक प्रश्न किया । (को, से)
२. हम आप—पूछते हैं । (को, से)
३. ये भाई—भोजन—प्रामप्रिया हैं । (को, के, की)
४. मैं इसे घर—कमरे—ले गया । (को, के, में, पर)
५. गरीबों—दया करो । (में, पर)
६. देश—प्यार करो । (का, को, से)
७. मैं पिताजी—डरता हूँ । (को, से)

कोष्ठकों में दी हुई धातुओं के वर्तमान कालिक कृदन्तों से खाली जगहों को भरोः–

१. वह— —गाडी में चढ गया । (चल)
२. — —बच्चे को दूध पिलाओ । (रो)
३. — —लडके को बचाओ (डूब)

४. — —की आत्मा स्वर्ग जाती है । (मर)

५. लडकियाँ— —नाचती हैं । (गा)

वाच्य बदलो:—

जैसे:— राम इतनी दूर चल नहीं सकता । (कर्तृवाच्य)
राम से इतनी दूर चला नहीं जाता । (भाव वाच्य)

१. हम यहाँ बैठ नहीं सकते ।

२. दुख के मारे सीता हँस नहीं सकती ।

३. गोपाल स्कूल तक दौड नहीं सका ।

४. पेट-भर खाने से रमा उठ नहीं सकी ।

५. मैं उसके साथ रह नहीं सकूँगी ।

पाठ १५

अन्य देशों के लोग—हब्शी

मध्य आफ्रिका में भयानक गर्मी पड़ती है। वर्षा भी ज्यादा होती है। घने जंगलों से वह देश भरा हुआ है। इन जंगलों में एक प्रकार के बौने लोग रहते हैं जो हब्शी कहलाते हैं।

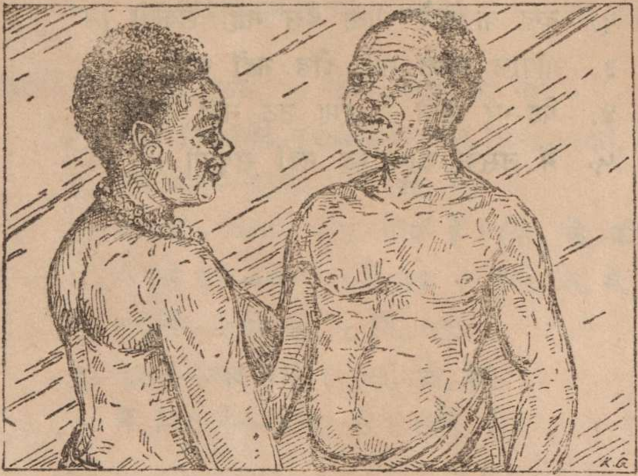

हब्शी स्याही जैसे काले रंग के होते हैं। उनके होठ मोटे और बाल घुंघराले होते हैं। नाक चपटी होती है। हब्शियों के अलग अलग हजारों भेद हैं। रीति-रिवाज रूप-रंग, भाषा वगैरह में एक वग दूसरे से भिन्न होता है।

उत्तर की ओर के अरबों और समुद्र के किनारे रहनेवाले गोरों के सहवास के कारण कुछ हब्शी थोडा-बहुत सभ्य बने हैं। लेकिन मध्य आफ्रिका के हब्शी प्रायः नंगे ही रहते हैं। गरमी इतनी ज्यादा होती है कि उन्हें कपडे पहनना अच्छा नहीं लगता। जैसा देश वैसा वेश!

इन लोगों को गहनों का बडा शौक होता है। वे नंगे रहते हैं; पर गहनों के बिना नहीं रहते। जिसको सोना मिलता है, वह सोने के कडे और बालियाँ पहनता है। जिसे सोना नहीं मिलता वह हाथी दाँत के कडों से खुश होता है। स्त्रियाँ हाथी दाँत के बडे बडे तोडे पैरों में पहनती हैं। बहुत सी स्त्रियाँ घुटने से लेकर एडियों तक पीतल के तोडे पहनती हैं। ये गले में काँच की गुरियों के हार भी पहनती हैं।

कौडियों का जितना सम्मान उस देश में है उतना शायद ही और कहीं है। गले में कौडियों का हार, बालों में कौडियों के गहने, हाथों में कौडियों के बाजूबंद। इस तरह जहाँ देखो वहाँ कौडियाँ ही कौडियाँ दिखाई देती हैं। वहाँ का चलतू सिक्का भी वही है।

हब्शियों का ध्यान सजावट की ओर खूब रहता है। ये लोग बालों पर तेल और मिट्टी चुपड कर उनके तरह तरह के

आकार बनाते हैं। कुछ औरतें बालों की छोटी छोटी लटें लटकाती हैं, तो कुछ अपने बालों को लपेटकर दो सींगों की तरह रखती हैं। हब्शियों के मुँह और छाती पर गुदना गुदाने की विचित्र रिवाज है। इन गुदनों से उनकी जमात मालूम हो जाती है।

हब्शी लोग अकसर जंगलों में रहते हैं। यहाँ शेर, हाथी, आदि जानवर मौज से घूमा करते हैं। यहाँ के लोग इन जंगली जानवरों से भी नहीं डरते। हब्शी का एक लडका भी मौका पडने पर शेर का मुकाबला करने में नहीं हिचकता।

अलग अलग स्थानों के हब्शी परिस्थितियों के अनुसार भिन्न भिन्न काम-धंधों में लगे रहते हैं। कुछ खेती में लगे रहते हैं तो कुछ बकरियाँ, गौएं, गधे, घोडे आदि के पालने में। लेकिन ज़्यादा लोग शिकार से ही गुज़रते हैं।

हब्शियों के झोंपडे मिट्टी और घास के बने होते हैं। वे झुंड के झुंड घर बना लेते हैं और उनके चारों ओर मिट्टी का किला खडा कर देते हैं। गाव का किला मजबूत रहता है क्योंकि भिन्न भिन्न जमातों के बीच लडाई हुआ करती है।

भूत-प्रेत, जादू, मंत्र आदि पर इनका बडा विश्वास है। इनका विश्वास है कि आदमी मरने के बाद भी किसी जगह

जीता रहता है । इसलिए ये लोग मुर्दों के साथ खाने-पीने की चीजें भी गाड देते हैं ।

ये लोग नाच-गान के बडे शौकीन होते हैं । रात को लकडी के ढेर में आग लगाकर उसके चारों ओर स्त्री-पुरुष नाचने और गाने लगते हैं । ये ढोल बजाते हुए गाते हैं और नाचते-नाचते मस्त हो जाते हैं । इस तरह सारी रात बीत जाती है ।

हब्शी लोग अवश्य ही असभ्य होते हैं । उनमें ऐसे भी लोग हैं जो नर मांस भी खाते हैं । शत्रुओं का मांस खा लेना उनकेलिए अभिमान की बात है । फिर भी एक जमात के भीतर घनिष्ठ भाईचारा होता है । सामूहिक भोजन उन्हें बहुत पसंद आता है । एक बर्तन में भोजन रखकर उसके चारों ओर बैठ जाते हैं । एक आदमी चमचे से भोजन का एक कौर खाकर अपने पास बैठे हुए आदमी को चमचा देता है । वह भी खाकर तीसरे आदमी को देता है । इस तरह वह भोजन खतम किया जाता है ।

ईसाई धर्म प्रचारकों एवं अन्य सभ्य लोगों के संपर्क के कारण अब हब्शियों की असभ्यता मिटती जा रही है । इसी वजह से हब्शियों के आचार-विचार और रहन-सहन में भी खास परिवर्तन हो रहा है ।

अभ्यास

अर्थ बताओः—

चपटी, बाली, तोडा, एडी, गुरिया, जमात, रिवाज, गुदना, हिचकना, कौर ।

जवाब दोः—

१. हब्शी लोग कहाँ रहते हैं?
२. हब्शियों की सूरत कैसी होती है?
३. हब्शियों की बस्ती कैसी होती है?
४. हब्शियों का सामूहिक-भोजन कैसे चलता है?
५. वे लोग अपने झोंपडे कैसे बनाते हैं?
६. वे अपने दिन कैसे बिताते हैं?
७. हब्शियों को नाच-गान के शौकीन क्यों कहते हैं?
८. हब्शी लोग गांव का किला मजबूत क्यों बनाते हैं?
९. 'सजावट की ओर उनका ध्यान खूब रहता है'— प्रमाणित करो ।
१०. 'हब्शियों की असभ्यता मिटती जा रही है'—क्यों?

व्याकरणः—

संज्ञा रूप लिखोः—

खुश, बीमार, शौकीन ।

लिंग बताओः–

पक्षी, चिड़िया, चिट्ठी, पत्र, सूरज, दही, खेत, जी, जान, चन्द्रमा, पेट, भूख, प्यास, रीढ, आंत, दांत, मुँह ।

कोष्ठकों में दी हुई धातुओं के भूतकालिक कृदन्तों से खाली जगहों को पूरा करोः–

१. किसान—— ——कपड़े पहनते हैं । (फट)

२. बच्ची—— ——है । (सो)

३. मनुष्य के—— ——अंग युद्ध क्षेत्र में पड़े थे । (कट)

४. तुलसीदास की—— ——रामायण एक उत्तम ग्रन्थ है । (लिख)

५. सैनिक वर्दी—— ——था । (पहन)

पाठ १६

बिजली

स्विच खोलो तो लैम्प जलने लगता है; पंखा चलने लगता है; रेडियो से आवाज़ निकलने लगती है और मोटर चलने लगती है। स्विच बंद करो तो यह सब अपना अपना काम बंद कर देता है। लैंप, पंखे, रेडियो, मोटर आदि में परिवर्तन करनेवाली ऊर्जा बिजली कहलाती है।

बिजली पैदा करने के दो आम तरीके होते हैं। एक बैटरी द्वारा और दूसरा डाइनमो द्वारा। बैटरी में रासायनिक ऊर्जा बिजली के रूप में परिवर्तित की जाती है तो डाइनमो में गतिक ऊर्जा। जहाँ बडी शक्तिशाली बिजली की आवश्यकता होती है वहाँ डाइनमो ही काम में लाया जाता है।

बिजली के आविष्कारकों में माइकेल फैरेडे का नाम सब से आदरणीय है। उन्हीं ने सर्वप्रथम डाइनमो का आविष्कार किया। फैरेडे ने देखा कि जब एक नाल रूपी चुम्बक की बाँहों के बीच एक तार का चक्कर घुमाया जाता है तो तार में बिजली दौडने लगती है। उस छोटे से सरल यन्त्र के परिष्कृत रूप हैं आज हमारे शहरों को प्रकाशित करनेवाले एवं सुखपूर्ण बनानेवाले बडे बडे डाइनमो।

हमारी पन-बिजली योजनाओं में डाइनमो को घुमाने की शक्ति पानी से मिलती है। पानी को संचित करके उसके प्रपात से डाइनमो घुमाया जाता है और बिजली पैदा की जाती है।

आजकल जितना उपयोग बिजली का होता है उतना और किसी वस्तु का नहीं होता। बिजली का सार्वलौकिक उपयोग उसकी सुगमता और सफ़ाई पर निर्भर है। पल भर में वह हज़ारों मील तक तार के ज़रिये दौडती है। एक बटन दबाने से बडी बडी मोटरें घूमने लगती हैं। मशीनों को चलाने केलिये कोयले या पेट्रोल का इस्तेमाल होता तो कारखानों से इतना धुआँ उठता कि वह दूर तक फैल जाता और वायुमण्डल भी खराब हो जाता। काम भी जल्दी और सरलता से न होता।

हमारे सभ्य जीवन में बिजली का महत्वपूर्ण उपयोग है। बिजली से हम अपने घरों को प्रकाशित कर सकते हैं। बिजली के चूल्हों पर भोजन बना सकते हैं। इन चूल्हों से न धुआँ उठता है न औरतों को बार-बार फूँकना पडता है। गरमी लगने पर पंखे से हवा की जा सकती है। एयर कन्डीशनर द्वारा कमरे के तापमान का नियंत्रण किया जा सकता है। बिजली का संचार होने पर इस्तिरी इतनी गरम हो जाती है कि दो एक मिनट में हम कपडों पर इस्तिरी कर सकते हैं।

बिजली से छोटे बडे यन्त्र ही नहीं, रेल और ट्राम भी चलती हैं। दूर रहनेवाले अपने दोस्तों से हम टेलीफोन पर बातें कर सकते हैं। रेडियो बजा सकते हैं। आजकल हमारे देश में टेलिविशन का प्रबंध भी होने लगा है।

अब बिजली के धक्के से मानसिक रोग का भी इलाज किया जाता है। नासूर जैसे भयंकर रोगों का इलाज भी बिजली के प्रभाव से किया जा सकता है।

अमेरिका, इंग्लैंड आदि देशों में न जाने कितने उपयोग बिजली के होते हैं। नौकरों के स्थान पर बिजली काम करती है। मोटर की रोशनी गैरेज के फाटक पर पडते ही फाटक अपने आप खुल जाता है। खजाने के पास चोर आया और थाने में खबर पहुँच गयी। सुनते हैं कि बिजली के मानुष भी होते हैं, जिन्हें रोबट कहते हैं! फिर क्या कहना!!

अभ्यास

नाल रूपी चुम्बक = Horse-shoe magnet
बाँह = arm; तार का चक्कर = Coil of wire
नासूर = Cancer

जवाब दोः—

१. बिजली कौन सी ऊर्जा है?

२. बिजली के आविष्कारकों में किसका नाम सब से आदरणीय है?

३. पन-बिजली योजनाओं में डाइनमो कैसे घुमाया जाता है?

४. बिजली का सार्वलौकिक उपयोग उसके किन किन गुणों पर निर्भर है?

५. 'हमारे सभ्य जीवन में बिजली का महत्त्वपूर्ण उपयोग है।' सिद्ध करो।

६. चिकित्सा में बिजली कैसे काम आती है?

७. बिजली से कौन से चमत्कार हो सकते हैं?

व्याकरणः—

'कि' का प्रयोग करके वाक्यों को जोड दोः—

१. हिन्दी सरल भाषा है। मैं कहता हूँ।

२. आज भोजन नहीं मिलेगा। मोहन से कहो।

३. आज पानी बरसेगा? या नहीं बरसेगा?

४. हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। गाँधी जी ने कहा।

५. तुमको पुरस्कार मिला। मैं बहुत खुश हूँ।

६. वह इतना ध्यान लगाकर बैठा था माँ की पुकार उसने नहीं सुनी।

खाली जगहों को भरोः–

१. बंबई यहाँ से बहुत दूरी—है ।

२. हम सोने—गहने पहनते हैं ।

३. बच्चे के सोने—माता भी सोने गई ।

४. रूई के कपड़े कम दाम—मिलते हैं ।

५. मुझ—साफ साफ कहो ।

६. रोने—क्या लाभ?

७. दोपहर—बाहर घूमने मत जाओ ।

८. किसी—मदद मत माँगो ।

९. मुझ—विश्वास करो ।

१०. राम केशव—छोटा है ।

प्रेरणार्थक रूप लिखोः–

सीखना, देखना, करना, मांगना, पीना, चलना, सीना, बनना, रोना, बोलना, लिखना ।

वाक्यों में प्रयोग करोः–

बहता हुआ, देखी हुई, गाते हुए, लिखा हुआ, बना हुआ ।

By heart.

पद्यभाग (आधुनिक)

१. गुलाब *

है गुलाब भी कितना सुन्दर ।
कितना उसका रूप मनोहर ॥१॥
रंग रंग का फूल दिखाता ।
क्या बाँका सुगन्ध फैलाता ॥२॥
कलियाँ कितनी शोभावाली ।
सचमुच इनकी छटा निराली ॥३॥
उन्हें तोड़कर लावेंगे हम ।
माला गूँथ बनावेंगे हम ॥४॥
वह देखो काँटे हैं इसमें ।
ऐब नहीं दुनिया में किसमें ॥५॥
तुम ऐबों पर ध्यान न देना ।
विद्या सीख सभी से लेना ॥६॥

— मन्नन द्विवेदी गजपुरी

* By Kind Permission of Sri Ram Narayan Lal Veni Madho, Publishers, Allahabad.

अभ्यास

१. कलियों की शोभा देखकर कवि की क्या अभिलाषा होती है?
२. अर्थ समझाओ:— ऐब नहीं दुनियां में किसमें?
३. कवि क्या उपदेश देते हैं?

२. हरे भरे *

कैसे सुन्दर खेत हमारे हरे-भरे लहराते ।
मानो झुक-झुक कर ये हमको अपने पास बुलाते ॥
शीतल मंद पवन बहता, सूरज उठता आता है,
हुआ भोर, तम चोर कहीं चुपचाप भगा जाता है ।
जागो जागो सोनेवालो, सोना बरस रहा है,
आज धरा के सुख-वैभव पर नभ भी तरस रहा है ।
तरु तरु की डाली डाली से हैं सुख के स्वर आते!
कैसे सुन्दर खेत हमारे हरे-भरे लहराते!!
चलो-चलो, लेकर हाथों में हँसिया और दराँती,
आज स्वयं धरती की छाती फूली नहीं समाती ।
चलो-चलो, हम फसल काट गाडी भर भर ले आयें,
खायें और खिलायें सब को, गीत खुशी के गायें ।
नया चित्र अपने जीवन का हम मिल आज बनाते!
कैसे सुन्दर खेत हमारे हरे-भरे लहराते!!

—द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी

* By Kind Permission of Sri Ram Narayan Lal Veni Madho, Publishers, Allahabad.

अभ्यास

१. अर्थ लिखो:- 'हुआ भोर............भगा जाता है।'
२. 'सोना बरस रहा है ।' इसका मतलब क्या है?
३. नभ क्यों तरसता है?
४. धरती की छाती क्यों फूली नहीं समाती?
५. हिन्दी में अर्थ लिखो:- 'नया चित्र अपने........हरे भरे लहराते।'

३. वर्षा ऋतु

(१)

रिमझिम रिमझिम सी बूँदें
जग के आंगन में छाईं ।
अपने लघु उज्ज्वल तन में
कितनी सुन्दरता लाईं ॥

(२)

मेघों ने गरज-गरज कर
मोहक संगीत सुनाया ।
इस हरी-भरी संध्या ने
हमको उन्मत्त बनाया ॥

(३)

सूखी सरिताओं ने फिर
सुन्दर नव जीवन पाया ।
लघु लहर-लहर पर देखो
सौंदर्य नाचने आया ॥

(४)

वन-उपवन पनप गये सब
कितने नव अंकुर आये,
वे पीले पीले पल्लव
फिर से हरियाली लाये ॥

(५)

अब अपना घूँघट खोले
कलिकाएँ झांक रही हैं,
वसुधा पर मंद हँसी से
सुन्दरता झांक रही है ।

(६)

प्रतिपल हम नाचें खेलें
जग-जीवन मधुर बनावें ।
अपने छोटे से घर में
सुख का संसार बनावें ॥

— श्री नर्मदाप्रसाद खरे

अभ्यास

१. सूखी सरिताओं ने नव जीवन कैसे पाया?

२. भाव समझाओः—
'अब अपना घूँघट .... सुन्दरता झांक रही है ।'

३. कवि हम से कौन सी आशा करते हैं?

४. कोयल

काली काली कू कू करती
जो है डालों डालों फिरती
कुछ अपने ही धुन में ऐंठी
छिपी हरे पत्तों में बैठी

जो पंचम सुर में है गाती
वह ही है कोयल कहलाती
जब जाडा कम हो जाता है
सूरज थोडा गरमाता है

तब होता है समा निराला
जी को बहुत लुभानेवाला
हरे पेड सब हो जाते हैं
नये नये पत्ते पाते हैं

कितने ही फल औ' फलियों से
नई नई कोंपल कलियों से
भली-भाँति वे लद जाते हैं
बडे मनोहर दिखलाते हैं

रंग रंग के प्यारे प्यारे
फूल-फूल जाते हैं सारे
हवा महक बहने लगती है
दिशा सब गमकने लगती है

तब यह मतवाली हो होकर
कूक कूक डाली डाली पर
अजब समा दिखला देती है
सब का मन अपना लेती है

लड़को जब अपना मुँह खोलो
तुम भी मीठी बोली बोलो
इससे कितने सुख पाओगे
सबके प्यारे बन जाओगे ।

— 'हरिऔध'

अभ्यास

१. कोयल क्यों ऐंठती है?
२. 'तब होता है समा निराला ।' कवि ऐसा क्यों कहते हैं?
३. अर्थ लिखो:– 'हवा महक..........अपना लेती है ।'
४. सब के प्यारे बन जाने का कवि क्या निर्देश देते हैं?

५. मेरा नया बचपन 12 lines by heart

बार बार आती है मुझको
मधुर याद बचपन तेरी ।
गया, ले गया तू जीवन की
सब से मस्त खुशी मेरी ॥

चिन्तारहित खेलना-खाना
वह फिरना निर्भय स्वच्छन्द ।
कैसे भूला जा सकता है
बचपन का अतुलित आनन्द ॥

मैं रोई, माँ काम छोड़कर,
आई, मुझको उठा लिया ।
झाड़ पोंछकर, चूम चूम
गीले गालों को सुखा दिया ॥

दादा ने चन्दा दिखलाया,
नेत्र नीर द्रुत दमक उठे ।
धुली हुई मुसकान देखकर
सबके चेहरे चमक उठे ॥

माना मैं ने युवा काल का
जीवन खूब निराला है ।
आकांक्षा, पुरुषार्थ ज्ञान का
उदय मोहनेवाला है ॥

किन्तु यहाँ झंझट है भारी।
युद्ध-क्षेत्र संसार बना।
चिन्ता के चक्कर में पड़कर
जीवन भी है भार बना॥

आ जा बचपन एक बार फिर,
दे दे अपनी निर्मल शान्ति।
व्याकुल व्यथा मिटानेवाली
वह अपनी प्राकृत विश्रान्ति॥

— सुभद्राकुमारी चौहान

अभ्यास

१. कवयित्री को किसकी याद आती है?
२. अर्थ लिखो:– 'चिन्ता रहित ....
.... अतुलित आनन्द।'
३. युवाकाल क्यों मोहनेवाला होता है?
४. भाव समझाओ:– 'किन्तु यहाँ झंझट है भारी।'
५. कवयित्री बचपन को फिर से आने का निमंत्रण क्यों देती है?
६. अर्थ समझाओ:– 'आ जा बचपन ....
.... विश्रान्ति।'

६. संदेश

पर्वत कहता शीश उठाकर
तुम भी ऊँचे बन जाओ;
सागर कहता है लहराकर
मन में गहराई लाओ ।

समझ रहे हो क्या कहती है
उठ उठ, गिर गिर तरल तरंग !
भर लो, भर लो अपने दिल में
मीठी-मीठी मृदुल उमंग !

पृथ्वी कहती धैर्य न छोड़ो
कितना ही हो सिर पर भार;
नभ कहता है फैलो इतना
ढक लो तुम सारा संसार !

— सोहनलाल द्विवेदी

अभ्यास

१. पर्वत और सागर हमें कौन सी शिक्षा देते हैं ?
२. पृथ्वी और आकाश कौन सा उपदेश देते हैं ?
३. अर्थ लिखो:– 'समझ रहे हो .... उमंग ।'

७. तब याद तुम्हारी आती है

(१)

जब बहुत सुबह चिड़ियाँ उठ कर
कुछ गीत खुशी के गाती हैं ।
कलियाँ दरवाज़े खोल-खोल
जब दुनियाँ पर मुसकाती हैं ।
खुशबू की लहरें जब घर से
बाहर आ दौड़ लगाती हैं ।
हे जग के सिरजनहार प्रभो!
तब याद तुम्हारी आती है ।

(२)

जब छम छम बूँदें गिरती हैं
बिजली चम-चम कर जाती है !
मैदानों में, वन-बागों में
जब हरियाली लहराती है ।
जब ठंडी-ठंडी हवा कहीं-
से मस्ती ढोकर लाती है ।
हे जग के सिरजनहार प्रभो!
तब याद तुम्हारी आती है ।

(३)

चुपचाप चमके तारों की
हरफिल जब रात सजाती है ।
जब चांद शान से उठता है,
दिल की दुनियाँ जग जाती है ।
कुछ पता नहीं, लेकिन जरूर
वह संदेशा कुछ पाती है
हे जग के सिरजनहार प्रभो!
तब याद तुम्हारी आती है ।

(४)

हम देख रहे हैं, नदी रात-दिन
हर दम बहती जाती है ।
जाड़ा-गरमी ऊँचा-नीचा,
सब कुछ वह सहती जाती है ।
हम सुनते नहीं, समझते हैं,
वह जो कुछ कहती जाती है ।
हे जग के सिरजनहार प्रभो!
तब याद तुम्हारी आती है ।

— पंडित रामनरेश त्रिपाठी

अभ्यास

१. कलियाँ धीरे धीरे विकसित होती हैं। इसे कवि के शब्दों में लिखो।

२. अर्थ लिखो:– 'चुपचाप चमके तारों ....
.... जग जाती है।'

३. "जब ठंडी ठंडी हवा .... ढोकर लाती है।"
—अर्थ लिखो।

४. कौन से दृश्य कवि को ईश्वर की याद दिलाते हैं?

१. कबीर के दोहे

By heart 10 times

" मधुर वचन है औषधी कटुक वचन है तीर ।
स्रवन द्वार ह्वै संचरै, सालै सकल शरीर ॥ १ ॥

धीरे धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय ।
माली सींचै सौ घड़ा, रितु आए फल होय ॥ २ ॥

दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय ।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय ॥ ३ ॥

बडा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड खजूर ।
पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर ॥ ४ ॥

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय ।
जो दिल खोजौं आपना, मुझसा बुरा न कोय ॥ ५ ॥ "

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके हिरदे सांच है, ता हिरदे गुरु आप ॥ ६ ॥

ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय ।
अपना मन सीतल करै, औरन को सुख होय ॥ ७ ॥ By heart 6 times

अभ्यास

१. औषधी=दवा । कटुक=कठिन; बुरा । स्रवन=कान है=से होकर । संचरै=संचार करते हैं । खालै=दुख देते हैं ।

२. मना=मन । होय=होता है। सींचै=सींचता है । रितु आये=ऋतु के आने पर । होय=होता है; होते हैं ।

३. सुमिरन=स्मरण । करै=करते हैं । कोय=कोई । जो ....तो=अगर........तो । काहे होय=काहे को होता है; क्यों होता है ।

४. पंथी=पथिक; यात्री । लागै=लगते हैं ।

५. जो=जब । देखन=देखने (के लिए) मिलिया=मिला । आपना=अपना। मुझसा=मेरे समान ।

६. बराबर=(के) समान । जाके=जिसके। हिरदे=हृदय में। सांच=सत्य । ता=उसके । गुरु=ईश्वर ।

७. बानी=वाणी । आपा=अभिमान; अहंकार । खोय=नष्ट हो जाये । सीतल=शीतल । औरन को= दूसरों को। सुख होय=सुख मिले ।

२. तुलसी के दोहे

काम क्रोध मद लोभ की, जौ लौं मन में खान ।
तौ लौं पंडित मूरखौ, तुलसी एक समान ॥ १ ॥

मुखिया मुख सों चाहिये, खान पान को एक ।
पालै पोसै सकल अंग, तुलसी सहित बिवेक ॥ २ ॥

तुलसी जे कीरति चहहिं, पर की कीरति खोइ ।
तिनके मुँह मसि लागि है, मिटहि न मरि हैं धोई ॥ ३ ॥

तुलसी संत सुअम्ब तरु, फूलि फलहिं पर हेत ।
इतते ये पाहन हनत, उतते फल वे देत ॥ ४ ॥

राम चरण अवलंब बिनु, परमारथ की आस ।
चाहत वारिद बिंदु गहि, तुलसी चढन अकास ॥ ५ ॥

तुलसी मीठे वचन तें, सुख उपजत चहुँ ओर ।
बसीकरण एक मंत्र है, परिहरु वचन कठोर ॥ ६ ॥

गोधन गजधन बाजिधन, और रतनधन खान ।
जब आवत संतोषधन, सब धन धूरि समान ॥ ७ ॥

अभ्यास

१. जौ लौं=जब तक । खान=भण्डार । तौ लौं=तब तक । तुलसी=तुलसीदास कहते हैं । मूरखौ=मूर्ख ।

२. मुखिया=गांव का प्रधान व्यक्ति । सों=के समान । मुखिया मुख सों चाहिए=मुखिये को मुख के समान होना चाहिए । खान पान को एक=खाने पीने के लिए एक=खाना-पीना एक ही मुख से होता है ।
पालै पोसै=पालन पोषण करता है ।
सकल अंग=शरीर के सभी अवयवों का ।

३. जे=जो । कीरति=कीर्ति । चहहिं=चाहता है । पर की=दूसरे की । खोइ=खोकर=नष्ट करके । तिनके =उसके । मसि=मषी; स्याही । मसि लागि है=कलंक लगता है । धोई-धोने पर भी । मरि हैं=मरने पर भी । न मिटहि=नहीं मिटता ।

४. संत=साधु; महात्मा । सुअंब तरु=आम का पेड । सु अंब=अच्छा आम । पर हेत=दूसरों के हित के लिए । फलि फलहिं=फूलता है और फलता है ।
इतते=इधर से । पाहन=पत्थर । हनत=मारते हैं; फेंकते हैं । उतते=उधर से । देत=देता है; देते हैं ।

५. बिनु=के बिना । अवलंब=सहारा; आश्रय ।
परमारथ=मोक्ष । आस=आशा ।

चाहत=चाहता है । बारिद=बादल; मेघ ।
गहि=पकड़ कर । अकास=आकाश । चढन=चढना ।

६. बचन तें=वचन से । चहुँ ओर=चारों ओर ।
उपजत=उत्पन्न होता है । बसीकरण=वशीकरण ।
परिहरु=छोड दो ।

७. गो=गाय । गज=हाथी । बाजि=घोडा । रतन=रत्न; हीरा । आवत=आता है । धूरि=धूल (तुच्छ) ।

७२-५८

६. रहीम के दोहे

रहिमन देखि बडेन को, लघु न दीजिये डारि ।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तलवारि ॥१॥

दीन सबन को लखत है, दीनहि लखै न कोइ ।
जो रहीम दीनहि लखै, दीनबंधु सम होइ ॥२॥

तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पियहिं न पानि ।
कहि रहीम पर काज हित, संपति संचहि सुजानि ॥३॥

बिगरी बात बनै नहीं लाख करो किन कोय ।
रहिमन बिगरे दूध को, मथे न माखन होय ॥४॥

धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय पियत अघाय ।
उदधि बडाई को कहै, जगत पियासो जाय ॥५॥

रहिमन ओछे नरन तें, तजो बैर अरु प्रीत ।
काटे चाटे स्वान के, दुहूँ भाँति विपरीत ॥६॥

अभ्यास

१. रहिमन=रहीम कहते हैं । बडेन को=बडों को; बडे लोगों को । देखि=देखकर । लघु=छोटों को । न डारि दीजिये=न छोड दीजिये; उपेक्षा की दृष्टि से न देखिए । सुई काम आवै=सुई से प्रयोजन होता है । तलवारि=तलवार । कहा करै=क्या करेगी ।

२. दीन=गरीब; दुखी । सबन को=सब लोगों को ।
लखत हैं=देखता है (सहायता के लिए सब की ओर देखता है ।) दीनहि=गरीब को; अनाथ को ।
न लखै=नहीं देखता (सहायता नहीं करता ।)
जो=अगर; यदि । लखै=देखता है ।
दीन बंधु=दीनों पर दया करनेवाला; ईश्वर ।
सम=समान । होई=हो जाता है ।

३. तरुवर=श्रेष्ठ वृक्ष । खात है=खाता है ।
सरवर=सरोवर; तालाब । न पियहिं=नहीं पीता ।
कहि=कहते हैं । पर काज हित=दूसरों के हित के लिए ।
सुजानि=सज्जन लोग । संपति=संपत्ति; धन ।
संचहि=संचय करते हैं; इकट्ठा करते हैं ।

४. बिगरी बात=बिगडी हुई बात ।
नहीं बनै=नहीं बनती; अच्छी नहीं बनती ।
किन करे=क्यों न करे । कोय=कोई ।
लाख करो=लाख चेष्टा करे; कितना ही प्रयत्न करे ।
बिगरे दूध को=बिगडे हुए दूध को । मथे=मथने से ।
माखन न होय=मक्खन नहीं मिलता ।

५. धनि=धन्य । पंक=कीचड । पियत=पीकर ।
लघुजिय=छोटे जीव । अघाय=तृप्त होते हैं ।
उदधि=समुद्र । को=कौन । कहै=कहता है ।
जगत=संसार । पियासो जाय=प्यासा रहता है ।

६. ओछे=नीच । नरन तें=मनुष्य से । वैर=विरोध ।
अरु=और । प्रीत=प्रीति; मैत्री । तजो=छोड दो ।
स्वान=कुत्ता । स्वान के=कुत्ते के । काटे=काटने पर ।
चाटे=चाटने पर । दुहूँ भांति=दोनों प्रकार से ।
विपरीत=प्रतिकूल ।

P.R. Mulinj
Ad. IX b
ms.
Sw. reg.
Z malandan. Im
NOR

1

ദേശീയ സമ്പാദ്യ പദ്ധതി

1) നിങ്ങളുടെ ഭാവിക്കുവേണ്ടിയും ഇൻഡ്യയുടെ ഭാവിക്കുവേണ്ടിയും മിച്ചം പിടിക്കുക.

2) നിങ്ങൾ പതിവായി സമ്പാദിക്കാറുണ്ടോ? ദേശീയ സമ്പാദ്യപദ്ധതിസർട്ടിഫിക്കറ്റുകളിൽ മുതൽ നിക്ഷേപിക്കുക.

3) നിങ്ങളുടെ നിക്ഷേപങ്ങൾക്ക് പോസ്റ്റ് ആഫീസ് സേവിംഗ്സ് ബാങ്ക് ഉപയോഗിക്കുക.

4) നിങ്ങളുടെ സമ്പാദ്യം രാഷ്ട്രത്തിന്റെ സമ്പാദ്യമാണ്.

5) സമ്പാദ്യം നിങ്ങൾക്കും രാഷ്ട്രത്തിനും അഭിവൃദ്ധി കൈവരുത്തുന്നു.

6) ആ ചെലവ് യഥാർത്ഥത്തിൽ ആവശ്യമുള്ളതാണോ? സമ്പാദിക്കുക; നിക്ഷേപിക്കുക.

7) നിങ്ങളുടെ ഭാവിഐശ്വര്യത്തിനു് നിങ്ങളുടെ സമ്പാദ്യങ്ങൾ നിങ്ങളുടെ ഗവണ്മെൻറിനു് ആവശ്യമുണ്ടു്.

COVER PRINTED AT THE GOVERNMENT PRESS,
TRIVANDRUM, 1962.

केरल रीडर
हिन्दी

Kerala Reader
HINDI

STANDARD IX

1962

Indic Digital Archive Foundation
gpura.org